अनुक्रमणिका

आमुख vii

प्रस्तावना xi

1. उत्तराखण्ड एक परिचय 1
डा. अजय सिंह रावत

2. कुमाऊँ का चन्द राज्य वंश 35
डा. श्याम लाल एवं डा. अजय सिंह रावत

3. गढ़वाल का परमार वंश 100
डा. अजय सिंह रावत

4. गोरखा शासन 152
डा. अजय सिंह रावत एवं डा. पंकज प्रियदर्शी

5. ब्रिटिश प्रशासनिक व्यवस्था 194
डा. अजय सिंह रावत

6. सन् 1815 ई0 के पश्चात के गढ़ नरेश 342
डा. अजय सिंह रावत

7. ब्रिटिश गढ़वालः एक सिंहावलोकन 362
डा. अजय सिंह रावत

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

* उत्तराखंड का इतिहास

प्रागैतिहासिक काल ⇒ इस काल में पाषाण उपकरण, गुफा, शैल चित्र आदि प्राप्त हुए हैं।

(i) लाखु गुफा / लखु उड्यार [1968] ⇒ अल्मोड़ा
[तुलना: भीमबेटका (m.p.)]

* खोजकर्ता → M.P. जोशी
* यह बाड़ेछीना के दलबैंड के समीप सुयाल नदी के तट पर है।
* यहाँ से नागफनी (OR नागफन) के आकार के शिलाश्रय प्राप्त हुए हैं। [गुफा OR Rock Shelters]
* इस गुफा में ② अलग-अलग सामूहिक नृत्य करते हुए दल हैं जिनमें क्रमशः 28 आदमी, 34 आदमी हैं।
* गुफा चित्रों में पशुओं के साथ-साथ बहुपदीय छिपकली भी है।

(ii) ल्वेथाप (अल्मोड़ा) ⇒ यहाँ से लाल रंग के 3 शिलाश्रय (शैलाश्रय (Rock Shelters)) प्राप्त हुए। तथा मानव को शिकार करते हुए, नृत्य करते दिखाया गया है।

(iii) फड़कानौला (अल्मोड़ा): खोज → 1985 ई. * नदी: सुयाल
खोजकर्ता → यशोधर मठपाल * 3 शैलाश्रय

(iv) पेटशाल (अल्मोड़ा) ⇒ खोज: 1989 ई. (यशोधर मठपाल द्वारा) * नदी: सुयाल
* कत्थई रंग (↳ भूरा/गेरुआ) की दो चित्र युक्त शिलाऐं मिली हैं।

(v) फलसीमा (अल्मोड़ा) ⇒ यहाँ से योग, नृत्य करती मानवआकृतियों के अलावा 2 कपमार्क्स (ओखली) प्राप्त हुई हैं।

UTTARAKHAND GYAN WITH DEEWAN

(v) देवीधुरा (चंपावत) ⇒ यहाँ से प्राचीन समाधियों की खोज 1856ई० में "हेनवुड" ने की। [हेनवुड या J.W. हेवउड] प्रकाशित

(vi) द्वाराहाट (अल्मोड़ा) ⇒ यहाँ के चंद्रेश्वर मंदिर से 1877ई० में रिवेट कर्लर्ड/कार्नवि ने कुछ कपमार्क्स (ओखली) जैसी 200 आकृतियाँ खोजीं।

(vii) पश्चिमी रामगंगा घाटी [अल्मोड़ा] ⇒ यहाँ के नौला गाँव से डॉ० यशोधर मठपाल ने प्राचीन शवागार व कपमार्क्स (73) खोजे।

(viii) बनकोट (पिथौरागढ़) (1989) यहाँ से 8 ताँबे की मानव आकृतियाँ मिलीं। वर्तमान में ये आकृतियाँ राजकीय संग्रहालय (Almora) में हैं।

(ix) नैनीपातल (1999) ⇒ यहाँ से (5) ताम्र आकृतियाँ मिलीं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य ⇒

* अल्मोड़ा के नौगाँव, मुनिया की ढाई, जोयाग्राम से कपमार्क्स (ओखली) जैसी आकृतियाँ मिली हैं।

* Dr. M.P. जोशी ने खेखन, जसकोट से ओखलियों की खोज की।

* Dr. यशवंत कठोच ने गोपेश्वर, नयार घाटी से ओखलियों की खोज की।

(x) सिलौली गाँव (पिथौरागढ़) ⇒ यहाँ से 7 कपमार्क्स प्राप्त हुए हैं।

UTTARAKHAND GYAN WITH DEWAN

i) ग्वारख्या गुफा (चमोली) ⇒ अलकनंदा नदी के समीप डुंगरी गाँव में स्थित ।

* यहाँ पीलीधारी चट्टानों पर गुलाबी रंग के चित्र मिले हैं । इन्हें डॉ॰ कठौच ने लोहिया रंग (लोहित रंग) का बताया है।

* यहाँ 41 आकृतियाँ [33 मानव की, 8 पशुओं] प्राप्त हुई हैं।

* इस गुफा की खोज का श्रेय "राकेश भट्ट" को जाता है।

ii) किमनी गाँव (चमोली) ⇒ थराली के समीप इस गाँव में सफेद रंग के हथियार व पशुओं के चित्र मिले हैं।
↳ पिंडर नदी

iii) मलारी (चमोली) : खोज: 1956 में शिवप्रसाद डबराल ने यहाँ से समाधि स्थल खोजे ।
↳ OR शवाधान

* मारछा (भोटिया जनजाति) से संबंधित यह गाँव धौलीगंगा घाटी में है।

* समाधि स्थल (शवाधानों) के साथ मानव कंकाल, पशु कंकाल, टोंटी, हत्थेयुक्त बर्तन, बर्तनों पर मोनाल का चित्र आदि प्राप्त हुए हैं।
↳ (पशु: जूबू)

* 1983 में गढ़वाल वि॰ वि॰ के (2001?) शोधकर्ताओं को यहाँ से एक बैल [जूबू या जोबा] का सम्पूर्ण कंकाल प्राप्त हुआ ।

* वर्ष 2001-02 में किये गए उत्खनन में यहाँ से 5.2 Kg. का स्वर्ण मुखौटा [Gold Mask] कांसे का कटोरा मिला । * मिट्टी के बर्तन: स्वात घाटी के समान

* यहाँ से प्राप्त शवों का सिर पश्चिम की ओर था।

(iv) पुरौला (उत्तरकाशी) ⇒ कमल नदी के तट पर स्थित इस स्थल से काले रंग के मृदभांड प्राप्त हुए।

* मृदभांडों के साथ घोड़े का दाँत भी प्राप्त ।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

(v) थापली (टिहरी) ⇒ यहाँ से काले रंग के बर्तन मिले।

(vi) बहादराबाद (हरिद्वार) [1951]

* 1951 ई० में नहर खोदते हुए ताँबे के उपकरण प्राप्त हुए।

* 1953 ई० में यज्ञदत्त शर्मा जी ने खुदाई करके लोहित मृदभांड भी खोजे

(vii) हुडली (उत्तरकाशी) : नीले रंग के शैल चित्र प्राप्त।
↳ [यमुना घाटी]

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य ⇒ [अद्य]

* उत्तराखंड का सर्वप्रथम उल्लेख → ऋग्वेद में। [नाम: देवभूमि, मनीषियों की पूर्ण भूमि]

* ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथ में UK को "उत्तर कुरु प्रदेश" कहा गया।

* कौशितकी ब्राह्मण ग्रंथ में "वाक्‌देवी का निवास स्थान बद्रीआश्रम" को कहा गया है।

* स्कंदपुराण में ⑤ हिमालयी खंड [नेपाल, मानसखंड, केदारखंड, जालंधर, कश्मीर] बताये गए हैं।

* ऋग्वेद में गंगा नदी को "त्रिपथका" कहा गया है।

* ऋग्वेद में अलकनंदा नदी को "ऋग्वेदिक सिंधु" कहा गया है।

* कालिदास जी के ग्रंथ रघुवंशम में गढ़वाल हिमालय को "गौरीगुरु" कहा गया।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

* आद्यऐतिहासिक काल

गढ़वाल क्षेत्र

⇒ अन्य नाम → बद्रिकाश्रम क्षेत्र, तपोभूमि, स्वर्गभूमि, केदारखंड

* मान्यतानुसार 1515 ई॰ में पवार वंश के 37 वें शासक अजयपाल इस क्षेत्र के 52 गढ़ों को जीतने के कारण इस क्षेत्र का नाम गढ़वाल पड़ा

* ऋग्वेद के अनुसार इस क्षेत्र के राजा शम्बर के 100 गढ़ों को देवराज इन्द्र तथा सुदास ने नष्ट कर दिया था।

* गढ़वाल की अल्कापुरी (चमोली) → कुबेर की राजधानी थी। → "मनु" का निवास स्थान था।

* प्रसिद्ध इतिहासकारों हरिराम धस्माना, भजन सिंह 'सिंह', शिवानंद नौटियाल के अनुसार ऋग्वेद में वर्णित "सप्त सिंधु प्रदेश" गढ़वाल में ही है।

* "जन्मेजय" ने ब्रह्म हत्या दोष से मुक्ति के लिए बद्रीकआश्रम के निकट व्यास गुफा के समीप वेद व्यास जी से महाभारत की कथा सुनी।

* बद्रीनाथ के समीप ही गणेश गुफा, नारद गुफा, व्यास गुफा, मुचकुंद गुफा, स्कंद गुफाओं में वैदिक ग्रंथों की रचना हुई। [क्षिसोमपर्वत पर]

* गढ़वाल की सितोनस्यू पट्टी (देवप्रयाग) में माता सीता धरती में समायीं। [इसके समीप ही प्रतिवर्ष मनसार मेला माता की याद में लगता है]

* टिहरी गढ़वाल में लक्ष्मण जी की तपस्थली "तपोवन" कहलायी।

* देवप्रयाग में श्रीराम का द्रविड़ शैली में निर्मित रघुनाथ मंदिर है।

* रामायणकालीन बाणासुर का राज्य गढ़वाल था, तथा उसकी राजधानी सोणीतपुर [अन्य नाम: ज्योतिषपुर, योषि, ज्योतिर्मठ] थी।

* व्यास जी ने बद्रिकाश्रम में ही "षष्टिलक्ष संहिता" की रचना की।
↳ इस ग्रंथ में देवप्रयाग को "समस्त तीर्थों का शिरोमणि" कहा गया है।

* महाभारत में दुर्योधन के पक्षधर पारावत (पर्वतीय) जाति का उल्लेख है।
  - यह जाति टोंस नदी घाटी (उत्तरकाशी) में निवास करती है।
  - मान्यतानुसार दुर्योधन की मृत्यु से यह जाति इतना दुखी हुई कि इनके आँसुओं से टोंस नदी का जन्म हुआ।
  - इस जाति के लोग आज भी टोंस नदी का जल ग्रहण नहीं करते हैं।

* प्राचीन ग्रंथों में गंगा नदी को किराती कहा गया है।

* महाभारत के अनुसार (आदिपर्व) अर्जुन का विवाह उलूपी से गंगा द्वार (हरिद्वार) में हुआ। [तब हरिद्वार, नागों की राजधानी थी।]

* गढ़वाल शब्द पँवार (परमार) वंश के राजाओं की देन है। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग चित्रकार मौलाराम तोमर ने 1815 ई० में किया। (चारण के अनुसार)

* स्कंद पुराण के अनुसार गढ़वाल की सीमा हरिद्वार से श्वेत पर्वत (हिमालय) तथा तमसा नदी (टोंस) से बौद्धांचल पर्वत (बधाण पर्वतमाला) तक थी।

* इस क्षेत्र में दो विद्यापीठ "कण्वाश्रम, बद्रिकाश्रम" थे।

* कण्वाश्रम में दुष्यंत व शकुंतला का प्रेम प्रसंग जुड़ा है।

* कण्वाश्रम मालिनी नदी के तट पर बसा है।

* कण्वाश्रम (पौड़ी) में कालिदास ने "अभिज्ञानशाकुंतलम" की रचना की।
  → वर्तमान नाम : चौकाघाट

* पांडवों के सहयोगी सुबाहु की राजधानी श्रीनगर थी।

* महाभारत के वन पर्व के अनुसार इस समय यहाँ पुलिंद (कुणिंद), किरात जातियों का आधिपत्य था।
  → में केदारनाथ को "भृंगतुंग" कहा गया।
  → ऋषि लोमश के साथ पांडव "गढ़वाल क्षेत्र" आये।

* सुबाहु के पुत्र विराट की पुत्री से अभिमन्यु का विवाह हुआ था।

कुमाऊँ क्षेत्र ⇒

* पौराणिक ग्रंथों के अनुसार चंपावत के समीप क्रांतेश्वर पर्वत पर कानदेव भगवान विष्णु ने कूर्मावतार या कच्छपावतार धारण किया था।
* इस पर्वत के कारण इस स्थान को कूर्मांचल / कुमूँ / कुमाऊँ कहा गया।
* ब्रह्म पुराण, वायु पुराण के अनुसार यहाँ किरात, किन्नर, यक्ष, गंधर्व, नाग जाति का वर्णन मिलता है।
* जाखन देवी मंदिर (अल्मोड़ा) में यक्षों के निवास की पुष्टि होती है।
* मुंडा भाषा बोलने वाले किरातों के वंशज आज भी अस्कोट, डीडीहाट में रहते हैं।
* मान्यतानुसार शिवजी ने जागेश्वर (अल्मोड़ा) में तपस्या की थी तथा यहीं कार्तिकेय जी का जन्म हु
* "तारीख-ए-मुबारकशाही" [by: याहिया बिन सरहिंदी] में भी कुमाऊँ क्षेत्र का वर्णन है। [सैय्यद वंश: मुबारक शाह]
* खस जनजाति के समय यहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ।

महत्वपूर्ण तथ्य ⇒

* UK में अप्सराओं व गंधर्वों का निवास स्थान → गंगाद्वार (हरिद्वार)
* नागों की राजधानी → गंगाद्वार
* सुबाहुपुर के रूप में श्रीनगर (पौड़ी) को जाना जाता है।
* चीनी यात्री ह्वेनसांग ने कुमाऊँ व गढ़वाल के संयुक्त क्षेत्र को ब्रह्मपुर कहा।
* बौद्ध साहित्य के "पालि भाषा" ग्रंथों में उत्तराखण्ड को "हिमवंत" कहा गया है।

UTTARAKHAND GK WITH JEEWAN

* उत्तराखंड की प्राचीन जातियाँ

1. **कोल जाति ⇒** इस प्रजाति को उत्तराखण्ड की सबसे प्राचीन प्रजाति माना जाता है।

* प्राचीन ग्रंथों में इन्हें मुण्ड या शबर कहा गया है।
* इनकी "सिंधु सभ्यता" से समानता मानी जाती है।
* ये लोग नाग पूजा, शिव पूजा में विश्वास रखते थे।
* इतिहासकारों के अनुसार नेग्रिटो जाति में घुल मिलकर इस जाति का जन्म हुआ।

2. **किरात प्रजाति ⇒** केदारखंड में इस प्रजाति को "भिल्ल" कहा गया है। तथा इस क्षेत्र के लिए "किरात मंडल" शब्द का प्रयोग हुआ है।

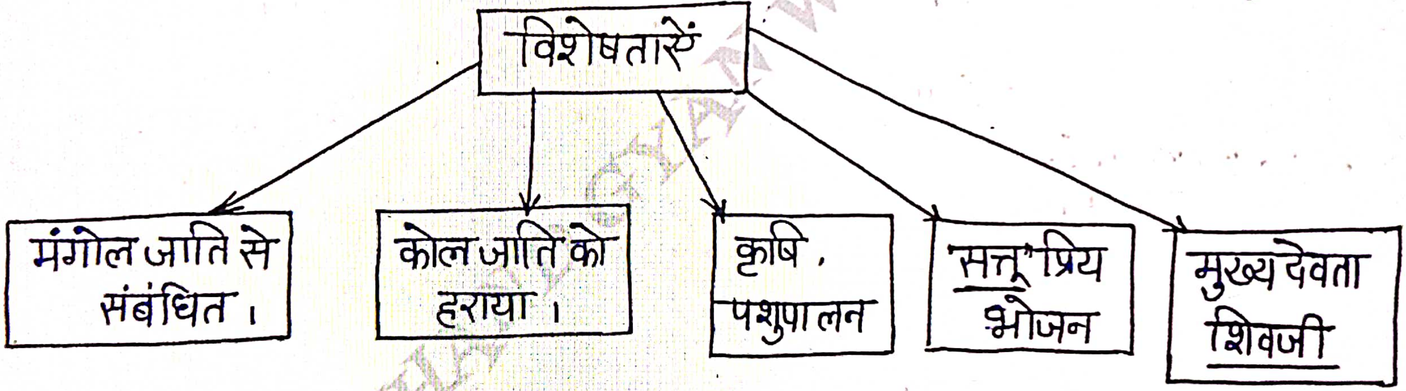

* मेगस्थनीज के अनुसार यह प्रजाति गंगा तट पर निवास करती थी, जिस कारण गंगा नदी को "किराती" भी कहा जाता है।
* केदारखंड के अनुसार जिस स्थान पर किरातों व अर्जुन का युद्ध हुआ, वह स्थान "विपलव केदार" या "शिव प्रयाग" नाम से जाना जाता है। [श्रीनगर के समीप]

13

* ऐतिहासिक काल

* महाजनपद काल में यमुना और टोंस के संगम क्षेत्र को कालकूट कहा जाता था। [कुणिंदों की राजधानी]
* यमुना का तटवर्ती क्षेत्र युगंधर नाम से जाना जाता था।
* अलकनंदा व पिंडर के पूर्व का रंगाभाषी प्रदेश "रंकू" कहलाता था।
* कुमाऊँ के तराई क्षेत्र से प्राप्त "सेलापानी स्तूप", शुंगकालीन माने जाते हैं।

प्रमुख शिलालेख

(i) नैनीताल, बाड़ावाला (देहरादून) ⇒ ईंटों पर उत्कीर्ण लेख
(ii) देवप्रयाग, कल्पनाथ ⇒ गुफाओं के अंदर लेख
(iii) गोपेश्वर, बाड़ाहाट (उत्तरकाशी) ⇒ त्रिशूल लेख
(iv) गोपेश्वर, कालीमठ, केदारनाथ, नालागढ़ ⇒ मंदिरों की दीवारों पर उत्कीर्ण लेख
(v) पांडुकेश्वर(4), कंडारा(1), चंपावत(1), बैजनाथ(1) ⇒ ताम्र पत्रित लेख
(vi) तालेश्वर लेख ⇒ पौरव वंश से संबंधित
(vii) कालसी ⇒ अशोक कालीन शिलालेख

* कालसी शिलालेख ⇒ 257 ई॰पू॰ में स्थापित शिलालेख। [अशोक कालीन] *13वाँ शिलालेख

प्राचीन नाम ⇓
* सुधनगर (ह्वेनसांग)*
* कलकूट
* युगशैल

* शिलालेख की भाषा → पालि भाषा + ब्राह्मी लिपि
खोज → फोरेस्टर (1860 ई॰)
* 1837 ई॰ में जेम्स प्रिंसेप ने अशोक शिलालेख को सर्वप्रथम पढ़ा। [दिल्ली टोपरा अभिलेख]
* कालसी स्थल → यमुना व टोंस के संगम पर है। *शिलालेख ⇒ "यमुना व अमलावा"

*स्तूप नष्ट : 1254 ई॰ [नसीरुद्दीन महमूद]

* घोषणा ⇒ मैंने राज्य के हर स्थान पर मनुष्यों व पशुओं की चिकित्सा व्यवस्था कर दी है
* यहाँ के निवासियों को "पुलिंद"
* इस क्षेत्र को "अपरांत" कहा गया है।

* शब्दावली ⇒
* पल्लिका ⇒ छोटे ग्राम
* महतम ⇒ ग्राम प्रधान
* भृत्य ⇒ सेवक
* प्रतिहार ⇒ द्वार रक्षक
* कोट्टपाल → गढ़रक्षक
* बलाध्यक्ष → सेनानायक
* अक्षपटलिक → लेखा परीक्षक
* कुलचारिक → तहसीलदार
* तालुका → तहसील

* कुणिंद वंश

* इस वंश को उत्तराखण्ड में शासन करने वाली प्रथम शक्ति माना जाता है।
* पाणिनी ने इन्हें कुलूल/कुलून कहा, जबकि कौटिल्य ने इन्हें कुलिंद कहा था।
* महाभारत में इन्हें द्विज कहा गया।
* टॉलमी ने 140 ईसा पूर्व इन्हें "कुलिन्द्रिने" कहा।
* इनका विस्तार → सतलज से गंगा के पर्वतीय भाग तक।
* रामायण के किस्किंधा कांड में कुणिंदों के लिए कुणिंदाश्च शब्द का प्रयोग हुआ है।
* पाणिनी के समय से मौर्यों के समय तक इस वंश में प्रजातंत्र या लोकतंत्र था।
* मौर्य काल तक इस वंश के सिक्कों पर जनपद कुणिंद अंकित था जो कि ब्राह्मी लिपि में लिखा था।

** उत्तराखंड में कुणिंदों के मुद्रा प्राप्ति स्थल

(i) सुमाड़ी तथा भैड़ गाँव (श्रीनगर)
(ii) थत्यूड़ तथा अथूड़ (टिहरी)
(iii) देवढूंगा (उत्तरकाशी)
(iv) कत्यूर घाटी (बागेश्वर)

* इस राजवंश से संबंधित 5 अभिलेख [भरहुद (4) (M.P.), मथुरा (1) (UP)] से प्राप्त हुए हैं।
* हरियाणा के अंबाला जनपद से कनिंघम को कुणिंद शासकों अगरुज, बलभूति, अमोघभूति की मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं।

* कुणिंद वंश का सबसे शक्तिशाली शासक अमोघभूति को माना जाता है। इस राजा से संबंधित मुद्राएँ अलकनंदा क्षेत्र, सुनेत बेहत से प्राप्त हुई हैं।
* इन मुद्राओं पर देवी माँ तथा मृग (हिरण) के चित्र अंकित हैं।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

15

* कालसी से प्राप्त अशोककालीन अभिलेख में कालसी के निवासियों को "पुलिन्द" कहा गया है तथा इस क्षेत्र को "अपरांत" कहा गया है।

* मान्यतानुसार ये लोग मौर्यों के अधीन थे तथा इनकी राजधानी कालकूट थी। अशोक मौर्य की मृत्यु के बाद इनकी राजधानी शत्रुघ्न (अंबाला) बनी।

* महाभारतकालीन पांडवों का सहयोगी सुबाहु भी कुणिंद जाति का था।

** कुणिंद मुद्राओं के प्रकार

1. अमोघभूति प्रकार ⇒

विशेषताऐं

- सिक्कों पर ब्राह्मी, खरोष्टी लिपि का प्रयोग
  - मुद्राऐं रजत (चाँदी), ताम्र से बनी है।
- ब्राह्मी लिपि से मुद्राओं पर "राज: कुणिंदस अमोघभूतिस महाराजस" लिखा है।
  - मुद्राओं में देवी (मानव रूप), मृग (लक्ष्मी माँ का पशु रूप) अंकित है।
- मुद्राओं के पृष्ठ भाग पर संवेदी वृक्ष, सहद्दल पर्वत नंदी पद, स्वास्तिक अंकित
  - चाँदी की मुद्रा का वजन → (31 to 38 ग्रेन)
  - ताम्र मुद्रा का वजन → 9.5 से 252 ग्रेन

2. अल्मोड़ा प्रकार की मुद्राऐं ⇒

↓ 8 राजाओं

विशेषताऐं

- शिवदत्त, शिवपालित, हरीदत्त, मगवध राजाओं की मुद्राऐं वर्तमान में लंदन (संग्रहालय) (अलबर्ट) में है। (4) मुद्रा
- कत्यूर से प्राप्त (54) मुद्राओं में शिवदत्त (1), आसेत (1), गोमित राजा (52) की मुद्राऐं हैं। गोमित्र
- गढ़वाल से राजविजयभूति की (1) मुद्रा प्राप्त।
- इन सिक्कों का वजन 119 ग्रेन से 327 ग्रेन तक है।

[1 gm = 15.43 gr]

UTTARAKHAND GK WITH JEEWAN

3. चत्रेश्वर या छत्रेश्वर प्रकार ⇒

विशेषताएँ

- कुणिंदों के ईष्ट देव छत्रेश्वर को समर्पित मुद्राएँ। → शिवजी
  - दुगड्डा के भौड़ गाँव से प्राप्त मुद्राओं पर भानु, रावण, छत्रेश्वर देव के नाम अंकित हैं।
- मुद्राओं में कार्तिकेय, तथा द्विहस्था मूर्ति के चित्र अंकित हैं।
  - मुद्राओं के एक हाथ में त्रिशूल होने के कारण इन्हें स्थानक शिव प्रकार की मुद्राएँ भी कहते हैं।
- इन मुद्राओं का वजन 131 ग्रेन से 291 ग्रेन तक है।

कुणिंद मुद्राओं से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य ⇒

* अमोघभूति की मुद्राओं से पता चलता है कि कुणिंद व्यापार प्रधान थे, क्योंकि इनकी मुद्राएँ सिरहप [तक्षशिला, पाकिस्तान] से भी प्राप्त हुई हैं।

* अमोघभूति, एकमात्र राजा था जिसकी मुद्राओं पर महाराज अंकित है।

* अमोघभूति के समकालीन गणराज्य औदुम्बर तथा यौधेय थे तथा इन दोनों वंशों के ईष्ट देव भी शिव जी थे।

* अमोघभूति की मृत्यु के बाद मैदानी भागों पर शकों का शासन हो गया।

* कुमाऊँ में शक संवत के प्रचलन, सूर्य मंदिरों, मूर्तियों की उपस्थिति से शकों के अधिकार की पुष्टि होती है।

*

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

* कुषाण काल

...ण वंश के शासक कनिष्क प्रथम के परिवार को हिमालय के तराई क्षेत्र पर अधिकार का श्रेय जाता है। [राजधानी→ पुरुषपुर (पेशावर)]

* कनिष्क ने 78 ईस्वी में शक संवत का प्रारंभ किया था।

** कुषाणों की मुद्रा प्राप्ति स्थल

- **शासक: कनिष्क प्रथम** — स्वर्ण मुद्राऐं काशीपुर से प्राप्त।
- **शासक: हुविष्क** — इसकी (44) मुद्राऐं 1972 में प्राप्त। मुद्राओं पर ईरानी देवी देवताओं का अंकन मिलता है।
- **शासक: वासुदेव द्वितीय** — इसकी (3) मुद्राऐं गोविषाण से प्राप्त। 1 स्वर्ण मुद्रा मुनिकीरेती से प्राप्त।

* (1) कुषाण कालीन मुद्रा→ वीरभद्र (ऋषिकेश) से प्राप्त।
* (1) मुद्रा→ मोरध्वज (कोटद्वार) से।
* (7) स्वर्ण मुद्राऐं→ कंचनपुरी (खटीमा) से प्राप्त।

{ खटीमा से प्राप्त मुद्राओं में राजा _____ तथा राजा वसु का नाम अंकित है, तथा ये मुद्राऐं वर्तमान में अल्मोड़ा संग्रहालय में रखी गयीं हैं।

UTTARAKHAND GYAN

** यौधेय राजवंश

- इस राजवंश ने कुणिंदों की मदद से कुषाणों को पराजित किया था।
- इस राजवंश की मुद्राऐं जौनसार भाबर (देहरादून), कालों का डांडा (पौड़ी), सहारनपुर से प्राप्त हुई हैं।
- अपनी मुद्राओं में इस राजवंश ने अपने ईष्टदेव कार्तिकेय जी का चित्रण किया है।
- मुद्राओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इस राजवंश में लोकतंत्र (गणतंत्र) व्यवस्था थी
- बाड़वाला की यज्ञवेदिकाओं का निर्माण शीलवर्मन राजा ने करवाया।

{ कुछ इतिहासकार शीलवर्मन को कुणिंद वंश का तो
कुछ अन्य इसे यौधेय वंश का मानते हैं। }

UTTARAKHAND GYAN WITH SEEMA

** गुप्त काल

* कर्तपुर राज्य

* गुप्त राजाओं के शासन काल में उत्तराखंड के राजनैतिक इतिहास की जानकारी समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति लेख, लाखामंडल के अभिलेख से मिलती है।

* गुप्त राजाओं के समय नेपाल की पश्चिमी सीमा पर कर्तपुर राज्य का वर्णन है। इस राज्य में गढ़वाल, कुमाऊँ, रुहेलखंड, यमुना का पश्चिमी क्षेत्र, हिमांचल प्रदेश शामिल था।

* इस साम्राज्य के संस्थापक भी कुणिंद थे जो गुप्त शासकों के अधीन थे।

* "राजशेखर" जी की पुस्तक काव्य मीमांसा में कार्तिकेय नगर के राज्य को "खशाधिपति" कहा गया है।

* विशाखदत्त की पुस्तक देवीचन्द्रगुप्तम तथा बाणभट्ट की पुस्तक "हर्षचरित" में कर्तपुर राजाओं के लिए शकपति शब्द का प्रयोग हुआ है।

* इन्हीं शकपति या खशाधिपति राजा ने चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय के बड़े भाई रामगुप्त को पराजित किया।

* कर्तपुर राज्य की राजधानी → कार्तिकेय नगर।

** दगलेश राजवंश

* लाखामंडल शिलालेख से पता चलता है कि 5वीं सदी के आस-पास यमुना नदी के पास यह राजवंश शासन करता था।

* इस शिलालेख में इस राजवंश के ⑨ राजाओं का उल्लेख है जिनमें से केवल ⑥ के नाम पढ़े जा सके हैं। (i) नरपति जयदास
2. गुहेश
3. अचल
4. दागलेश दास
5. रुद्रेश दास
6. दागलेश केतु

UTTARAKHAND GK WITH SHEETAL

* सिंहपुर का यदुराजवंश

* गुप्त वंश के कमजोर होने पर यह राजवंश अस्तित्व में आया।

* इस वंश की जानकारी राजकुमारी ईश्वरादेवी के लाखामंडल अभिलेख से होती है।

* राजकुमारी ईश्वरा भास्कर वर्मन की पुत्री तथा जालंधर के राजकुमार चन्द्रगुप्त की पत्नी थीं।

* राजकुमारी ईश्वरा देवी ने लाखामंडल (देहरादून) में एक शिव मंदिर व शिलालेख खुदवाया।
  - → (प्राचीन नाम: मठ)

* इस शिलालेख में इस राजवंश की 11 पीढ़ियों के 12 राजाओं का वर्णन है।

* यदुवंश का संस्थापक → सेन वर्मा

* नाग वंश

* यदु वंश के बाद हिमालय के पश्चिमी प्रदेशों में नागवंश का राज हो गया।

* इनकी जानकारी का मुख्य स्रोत → गोपेश्वर से प्राप्त त्रिशूल लेख है। यह लेख दक्षिण ब्राह्मी लिपि में लिखा गया है।

* गोपेश्वर के लेख में 4 नाग राजाओं (गणपति नाग, अशु नाग, विभू नाग, स्कंद नाग) का उल्लेख है।
  - गणपति नाग → सबसे शक्तिशाली शासक।
  - → रुद्रशिव मंदिर (गोपेश्वर) के समीप त्रिशूल स्थापित कि

* इस वंश से संबंधित एक त्रिशूल लेख बाड़ाहाट (उत्तरकाशी) से प्राप्त हुआ है।
  - (उत्तर ब्राह्मी लिपि)
  - (1191 में UK में नेपाल राजा अशोकचल्ल के आक्रमण की जानकारी मिलती है।)

* अशोकचल्ल की मदद कुमाऊँ के राजा पुरुषोत्तम ने की।

* अशोकचल्ल ने उत्तराखंड से बोधगया (बिहार) तक सफल आक्रमण किया।

* अशोकचल्ल ने बोधगया का राजा दशरथ चल्ल को नियुक्त किया।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

* राजा हर्ष के बाद उत्तराखण्ड

* हर्ष के शासन से पहले उत्तराखंड राज्य मौखरि वंश के राजा "ग्रहवर्मा" के अधीन था।
* ग्रहवर्मा, राजा हर्ष की बहन का पति था। ग्रहवर्मा की मृत्यु के बाद यह राज्य पुनः हर्षवर्धन के अधीन हो गया।
* हर्ष की मृत्यु के बाद ③ गढ़ प्रमुख उभरकर आये→
  (i) शत्रुघ्न, (ii) ब्रह्मपुर (iii) गोविषाण

} इन सभी तथ्यों की सूचना चीन के यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांत से मिलती है। (634ई०
→{ ह्वेनसांग भारत में→629 से 645ई० तक रहा

(i) शत्रुघ्न राज्य ⇒ ह्वेनसांग के अनुसार इस राज्य के पूर्व में गंगा नदी तथा मध्य से यमुना नदी बहती थी।

* कनिंघम के अनुसार इनके अधीन पश्चिमी गढ़वाल, सिरमौर, अम्बाला, सहारनपुर था
* इस राज्य की राजधानी→ सुघ गाँव थी।

(ii) ब्रह्मपुर राज्य या पौरव वंश या पर्वताकार वंश ⇒

* इस राज्य की जानकारी का एकमात्र स्रोत तालेश्वर (पिथौरागढ़) से प्राप्त अष्टधातु अभिलेख है। इसमें द्वितीयवर्मन, विष्णुवर्मन के नाम अंकित हैं। (कुल 5 का उल्लेख
* यह अभिलेख 1915 में प्राप्त हुआ था।
* इस राज्य की सीमा गंगा नदी से काली नदी तक थी।
* कनिंघम इसी राज्य को कुमाऊँ व गढ़वाल मानते हैं जिसमें भाबर भी शामिल था।
* इस राज्य का वर्णन मार्कण्डेयपुराण, बृहत्संहिता में मिलता है।
* ह्वेनसांग ने पौरव वंश के इस क्षेत्र को ही "पो-लि-हि-मो-पु-लो" कहा। जिसकी राजधानी ब्रह्मपुर [वर्तमान में विंसर क्षेत्र] थी।
* ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांत (पुस्तक) का नाम→ "सी-यू-की" है।
*

* इस राजवंश के कुल देवता वीरणेश्वर स्वामी (वर्तमान नाम: किंसर महादेव) थे।
* इस वंश के अंतिम ③ राजाओं ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।

** ब्रह्मपुर वंश का शासन प्रबंध

* सर्वोच्च अधिकारी → राजा (सहायता के लिए मंत्रिपरिषद)
* राजा जिस स्थान पर परिवार के साथ रहता उसे कोट कहा जाता था। जिसकी सुरक्षा का जिम्मा कोटाधिकरण अधिकारी को था।
* राजपरिवार की सुरक्षा के लिए नियुक्त अधिकारी → प्रतिहार
* राजा के भोजनालय की व्यवस्था: सुकारपति देखता था।
* सेना का प्रमुख ____________ था तथा सेना ③ भागों (गज, अश्व, पैदल) में विभक्त थी।
* पुलिस अधिकारी दण्डपासिक कहलाता था।
* भूमि कर वसूलने वाला अधिकारी भागीक कहलाता था तथा भूमि कर को भाग कहा जाता था।
* भूमि कर के रूप में उपज का (1/6) भाग अनाज लिया जाता था।
* भूमि को ② वर्गों में बाँटा गया था → (i) केदारभूमि (सिंचित भूमि)
  (ii) सारी भूमि (असिंचित भूमि)

* ह्वेनसांग के अनुसार ब्रह्मपुर जनपद की उत्तरी सीमा पर महाहिमालय में "स्वर्णगोत्र राज्य" भी था।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

23

3. गोविषाण राज्य ⇒

* कनिंघम के अनुसार इस राज्य के अंतर्गत काशीपुर, रामपुर, पीलीभीत जनपद आते थे। तथा विस्तार कालागढ़ (पश्चिमी रामगंगा) से टनकपुर (शारदा) तक था।
* राजधानी: गोविषाण (काशीपुर के समीप)
* वर्तमान काशीपुर की स्थापना: 1639 ई० में
* ह्वेनसांग ने गोविषाण को "किउ-पि-स्वङ्-न" नाम दिया।
  - ↳ इसने गोविषाण राज्य की यात्रा: 636 ई० में ✓
    - ↳ महाभारत में इस क्षेत्र को गोवासन कहा गया।

** कुछ अन्य राजवंश / राज्य ⇒

* स्वर्णगोत्र राज्य :→ यह ब्रह्मपुर राज्य के उत्तर में था।
  * इसे "पूर्वी स्त्री राज्य" कहा जाता था।
  * विल्सन ने इस राज्य को "भोट प्रदेश" कहा।

* कल्याणवर्मन का राज्य ⇒ इसका राज्य देवप्रयाग के समीप स्थित था।
(इसकी जानकारी: पलेठी शिलालेखों से होती है।)
* मान्यतानुसार ललितादित्य मुक्तापीठ ने मध्य प्रदेश के शासक यशोवर्मन से यह राज्य अपने अधीन कर लिया था।
* कल्हण की पुस्तक राजतरंगिणी के अनुसार ललितादित्य मुक्तापीठ ने स्वर्णगोत्र प्रदेश में नरसिंह मंदिर का निर्माण करवाया था।

UTTARAKHAND GK WITH JEEWAN

** कत्यूरी राजवंश या कार्तिकेयपुर राजवंश

* ...मपुर राजवंश की शक्ति क्षीण हो जाने पर 700ई० (लगभग) मध्य हिमालय में एक राजवंश स्थापित हुआ।

[* इस राजवंश को यशवंत कठोच ने कार्तिकेयपुर राजवंश
अजय रावत व. घनश्याम जोशी जी ने कत्यूरी राजवंश कहा।]

* इस राजवंश से लगभग 9 अभिलेख प्राप्त हुए हैं।

1. त्रिभुवन राज का बागेश्वर मंदिर शिलालेख ।
2. ललितसुर देव का पांडुकेश्वर (चमोली) अभिलेख ।
3. ललितसुर देव का पांडुकेश्वर अभिलेख ।
4. ललितसुर देव का कंडारा अभिलेख (नैनीताल) ।
5. भूदेव का बागेश्वर शिलालेख ।
6.
7. पद्मदेव का पाण्डुकेश्वर ताम्र अभिलेख ।
8. सुविक्ष राजदेव का पाण्डुकेश्वर ताम्रलेख ।
9. बैजनाथ से प्राप्त तीन शिलालेख ।

*(सन 700 से 1050 ई० तक) इस वंश की राजधानी कार्तिकेयपुर (जोशीमठ) रही । इसके बाद राजधानी बदलकर कत्यूर घाटी (बागेश्वर) बनायी गयी।

* कार्तिकेयपुर राजाओं के लिए सर्वप्रथम कत्यूरी नाम का प्रयोग एटकिंसन ने अपनी पुस्तक "हिमालयन डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स" में किया।

* Dr. अजय रावत के अनुसार कत्यूरियों की राजधानी टिकूनी थी।

* कनिंघम इनकी राजधानी लखनपुर (पश्चिमी रामगंगा तट) को मानते हैं।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

* बागेश्वर से प्राप्त त्रिभुवन राज के शिलालेख से पता चलता है कि इस वंश का संस्थापक बसंत देव था।

* अभिलेखों से पता चलता है कि इस वंश के (3) परिवारों ने उत्तराखंड में शासन किया।

25

1→ बसंतदेव का परिवार
2→ निबंरदेव का परिवार
3→ इष्टदेव का परिवार

** बसंत देव का परिवार

* कत्यूरी राजवंश का प्रथम परिवार था।
* राजधानी : जोशीमठ (कार्तिकेयपुर)
* उपाधि : परम भट्टारक महाराजाधिराज
* बागेश्वर शिलालेख के अनुसार इनकी पत्नी का नाम : राजनारायणी
* बसंत देव के बाद इसके पोते "खर्परदेव" का उल्लेख मिलता है।
  - उपाधि → परमभट्टारक महाराजाधिराज
  - पत्नी → कल्याणी देवी
  - पुत्र → कल्याणराज (अगलेराजा)
    - पत्नी → लद्दादेवी
* इस वंश के राजाओं का क्रम ⇒

बसंत देव
↓
अज्ञात पुत्र
↓
खर्परदेव
↓
कल्याण राज
↓
त्रिभुवन राज

* बागेश्वर लेख के अनुसार त्रिभुवन राज ने व्याघ्रेश्वर देवता मंदिर निर्माण हेतु भूमि दान में दी।

* इस समय बंगाल के पाल शासक "धर्मपाल" ने गढ़वाल पर आक्रमण किया था।

UTTARAKHAND GK WITH JEEWAN

* निम्बर वंश

त्रिभुवन राज के बाद कार्तिकेयपुर राजवंश "निंबर वंश" के अधीन आ गयी थी।

26 की पत्नी का नाम → नाशूदेवी (दाशूदेवी)

निंबर के पुत्र का नाम → इष्टगण

निंबर शैवमत (शिवजी) को मानते थे। इन्होंने जागेश्वर मंदिर में चबूतरों का निर्माण करवा

इष्टगण → उपाधि: परमभट्टारक, परमब्रह्मा, परमहेश्वर
- → पाण्डुकेश्वर अभिलेख में इसे "वराहअवतार" बताया गया है।
- पत्नी → धरादेवी (वेगा देवी)
- → जागेश्वर में नवदुर्गा, महिषमर्दिनी, नटराज, लकुलीश मंदिरों का निर्माण करवाया
- → पुत्र: ललितसूर देव

* ललित सूरदेव: इस वंश के सर्वाधिक ताम्रलेख इसी के हैं।
  * ताम्रपत्रों के अनुसार इनकी ② पत्नियाँ: लयादेवी, शामा देवी
  * अभिलेखों के अनुसार इसका राज्यारोहण: 832ई०
    मृत्यु: 854ई. में हुई।
  * ललित सूरदेव के बाद उसका पुत्र भूदेव शासक बना।

* भूदेव :→ यह बौद्ध धर्म का प्रबल विरोधी था, इसने "बुद्धश्रमण शत्रु" की उपाधि धारण की।

UTTARAKHAND WITH JEEWAN

27

सलोणडादित्य या ईच्छरदेव का परिवार

* भूदेव के कार्तिकेयपुर के सिंहासन पर सलोणडादित्य बैठा।
  - उपाधि धारण नहीं की
  - पत्नी → सिद्धवली देवी
  - पुत्र → इच्छरदेव

* इच्छरदेव
  - उपाधियाँ → परमेश्वर, परममहेश्वर परमब्राह्मण
  - पत्नी → सिंधू देवी
  - पुत्र → देशट देव

* देशट देव
  - पत्नी → पझल्ल देवी
  - पुत्र → पद्म देव
  - प्रमुख कार्य → विजयेश्वर मंदिर निर्माण हेतु यमुना ग्राम दान में दिया।

* पद्म देव की जानकारी "पाण्डुकेश्वर अभिलेख" से मिलती है।
* पद्म देव ने बद्रीनाथ मंदिर के लिए भूमि दान दी।
* पद्म देव के बाद सुभिक्षराज देव शासन पर बैठा।
  → इसने राजधानी सुभीक्षपुर बनायी।
* कुछ समय बाद <u>नरसिंह देव</u> ने राजधानी कत्यूर घाटी (बागेश्वर) को बनाया। (1010ई.

UTTARAKHAND GYAN JEEWAN

* कार्तिकेयपुर राजाओं के विषय में इतिहासकारों के मत ⇒

* लक्ष्मीदत्त जोशी के अनुसार कार्तिकेयपुर राजा मूल रूप से अयोध्या के निवासी थे जिनके आदिपुरुष शालिवाहन तथा ईष्टदेव कार्तिकेय थे।

* बद्रीदत्त पांडे जी के अनुसार →
{ कार्तिकेयपुर के राजा → सूर्यवंशी
इनकी भाषा → संस्कृत तथा लोकभाषा → पालि थी।

* कत्यूरी राजाओं के समकालीन घटनाएँ

* इनके समय ही आदिगुरु शंकराचार्य का आगमन UK में हुआ तथा शंकराचार्य जी ने बद्रीनाथ, केदारनाथ मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया।
↳ [सन् 820 में यहाँ शंकराचार्य का निधन हुआ।]

*

* जिस समय हिमालय में कार्तिकेयपुर राजाओं का शासन था, उस समय गढ़वाल के दक्षिण में मयूर राज्य अस्तित्व में आया। { मयूर राज्य की राजधानी: मोरध्वज थी।
ह्वेनसांग ने मयूर राज्य को : मयूलो कहा। }

* जोधपुर शिलालेख के अनुसार ललित सूरदेव के समय कार्तिकेयपुर (मयूर) राजाओं पर प्रतिहार वंश के राजा "बाउक" ने आक्रमण किया।

* सन् 888 के आसपास कार्तिकेयपुर राजवंश में सलोणडादित्य का शासन था तथा चाँदपुरगढ़ का राजा भानू प्रताप था।

* इसी समय धार (गुजरात) के परमार/पँवार/पाल/कनकवंशीय राजा कनकपाल ने चाँदपुरगढ़ में परमार वंश की स्थापना की।

UTTARAKHAND GYAN JEEWAN

29

** कार्तिकेयपुर राजाओं के पदाधिकारी

* इनकी सेना ④ प्रकार की थी →
    (1) पदातिक या गौल्मिक → पैदल सेना।
    (2) अश्वबलाधिकृत → घोड़ों पर चलने वाली सेना।
    (3) हस्तिबलाधिकृत → हाथियों पर चलने वाली सेना।
    (4) ऊष्ट्रबलिधिकृत → ऊँटों पर चलने वाली सेना।

* चोर, डाकुओं को पकड़ने वाला अधिकारी → चरोधरविक
* अपराधियों को पकड़ने वाला अधिकारी → दोषापराधिक
* गुप्तचर विभाग का मुखिया → दुःसाध्य साधनिक
* सीमाओं की सुरक्षा का प्रहरी → प्रांतपाल
* सीमांत मार्गों पर नियुक्त रक्षक → वर्मपाल
* दर्रों के रक्षक → घटपाल
* नदी घाटों से कर वसूलने वाला → नरपति या तरपति
* वनों की रक्षा करने वाला → खंडरक्ष।
* राज्य में कृषि की उन्नति का ध्यान रखने वाला → क्षेत्रपाल
* भूमि की माप रखने वाला अधिकारी → प्रभातार
* भूमि के मापन के लिए दोणवापम या नालीवापम प्रणाली थी।
* डोटी परिवार के राजा के पुत्र को रैंका कहा जाता था।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

* प्रांतों में विभाजित राज्य में प्रत्येक प्रांत में राज्यपाल नियुक्त होता था जिसे उपरिक कहा जाता था।

* प्रांतों को जिलों में बाँटा जाता था। जिले को विषय कहा जाता था।

* राजा के पशुओं से दूध निकालने का कार्य करने वाला आभिर कहलाता था।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

* कुमाऊँ का चन्द राजवंश

* एटकिंसन के अनुसार इस वंश का संस्थापक → सोमचंद
* बद्रीदत्त पांडे के अनुसार इस वंश का संस्थापक → सोमचंद
* सोमचंद ने सूयो (चंपावत) नामक स्थान पर " राजबुंगा का किला" बनवाया।

31 ...किंसन के अनुसार सोमचंद कन्नौज नरेश के भाई थे।

* इलियट के अनुसार कुमाऊँ के राजा स्वयं को कन्नौज के राजा चंद्रपाल (चंदपाल) का वंशज बताते हैं।
* बद्रीदत्त पांडे के अनुसार सोमचंद झूँसी (इलाहाबाद) के राजपुत थे।

* थोहरचंद चंद वंश के संस्थापक के रूप में ⇒

(i) W. फ्रेजर जिनकी पुस्तक "रिपोर्ट ऑन कुमाऊँ एवं गढ़वाल" (1813) है, वे हर्षदेव जोशी के विवरण के आधार पर चंद वंश का संस्थापक थोहरचंद को मानते हैं।

(ii) फ्रांसिस हैमिल्टन जिनकी पुस्तक "किंगडम ऑफ नेपाल (1881)" है। इस पुस्तक में हैमिल्टन भी चंद वंश का संस्थापक थोहरचंद को मानते हैं।

* थोहरचंद का राज्यारोहण → 1261–62 ई॰ मानी जाती है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य ⇒

* चंद वंश का वास्तविक संस्थापक → सोमचंद
* बद्रीदत्त पांडे के अनुसार चंद वंश की स्थापना → 700 ई॰
* एटकिंसन के अनुसार चंद वंश की स्थापना → 953 ई॰
* अजय रावत के अनुसार चंद वंश की स्थापना → 1018 ई॰ ✓
* डॉ॰ श्याम लाल के अनुसार चंद वंश की स्थापना → 1025 ई॰ ✓

* द्वाराहाट से गुर्जर देव मंदिर की प्राप्ति से यह सिद्ध होता है कि चंद राजा प्रतिहारों के वंशज रहे होंगे।

* इतिहास में झूँसी (इलाहाबाद) को चंद्रवंशी राजाओं का राजधानी "प्रतिष्ठान" कहा जाता है।

UTTARAKHAND GK WITH JEEWAN

7:28 Thu, 19 Oct 100%

महत्वपूर्ण तथ्य ⇒

* चंद वंश का मूल धार्मिक स्थल → जागेश्वर
* चंद वंश का शवदाह स्थल → जागेश्वर

कुमाऊँनी कला में खशिया राज को "कुमाऊँनी कला का स्वर्ण काल" कहा जाता है।

* चंद वंश के कुल 61 राजा हुए।
* नित्यानंद मिश्र ⇒ UK के प्रमुख पुरातत्वविद व इतिहासकार थे। इन्होंने वैज्ञानिक आधार पर चंद वंश 4 ताम्र पत्रों का संपादन किया
* पँवाडे का अर्थ → लोकगाथाएं
* प्रारंभिक राजधानी → चंपावत, [बाद में राजधानी: अल्मोड़ा]
* चंदों का राजमहल: चौमहल
* चंद राजाओं की वंशावली: "मानोदय काव्य" में

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

1.* सोमचंद [1018 से 1046ई०]

* **प्रमुख तथ्य**
- चंद वंश का वास्तविक संस्थापक : सोमचंद
- शिवजी का उपासक
- राजधानी → चंपावत
- सूयो/सुई/राजबुंगा किले का निर्माण करवाया।

...चंद ने सर्वप्रथम 4 किलेदार (कार्की, बोरा, तड़ागी, चौधरी) नियुक्त किये।
- चारों नेपाल निवासी
- इन्हें चाराल भी कहा जाता था।

* सोमचंद ने सर्वप्रथम दोनकोट के रावत राजा को पराजित किया।

* सोमचंद ने महरा जाति को मंत्रीपद जबकि फर्तयालों को सेनापति का पद दिया।

* सोमचंद प्रारंभ में डोटी के राजा (जयदेव मल्ल) को कर (Tax) दिया करता था।

अन्य तथ्य : [महरा → कोटलगढ़] [फर्तयाल → डुंगरी] * ग्राम में बूढ़ा/सयानों की नियुक्ति।

* कुछ इतिहासकारों के अनुसार सोमचंद गद्दी पर 953ई० में बैठा।

* मल्ल वंश के प्रारंभिक राजा वामदेव ने अपनी ईष्ट देवी चंपावती के नाम पर इस क्षेत्र का नाम "चंपा/चंपावत" रखा।

2. आत्मचंद (1046 से 1066 ई०) → सोमचंद का पुत्र।

3. पूर्णचंद (1066 से 1084ई.) → आत्मचंद का पुत्र।

सुई राज्य → ब्रह्मदेव राजा → पुत्री → विवाह → सोमचंद

[मल्ल वंश का प्रथम राजा : वामदेव]

4. इन्द्र चँद :* इसने चंपावत में सर्वप्रथम "रेशम उत्पादन" का कार्य करवाया।

* इस कार्य के लिए मैदानी बुनकरों "परवायों" को चंपावत लाया।

* रेशम उत्पादन हेतु चीन से व्यापारिक संबंध बनाये।

5→ संसारचंद

6→ सुधा चंद

7→ हरिश चंद

8⇒ वीणा चंद⇒

* यह एक अयोग्य एवं विलासी प्रकृति का राजा था।
* इन कमियों का फायदा उठाकर डोटी के राजाओं के अधीन रहने वाले खश राजाओं ने यहाँ आक्रमण किया।
* गोपेश्वर त्रिशूल लेख से पता चलता है कि 1191ई० में नेपाली राजा अशोक चल्ल ने यहाँ आक्रमण किया।
* इस लेख में अशोक चल्ल को "खश राजाओं का स्वामी" भी कहा गया है।
* 1223ई० में उत्तराखण्ड पर खश राजा क्राचल देव का अधिकार हो गया।
* बालेश्वर (चंपावत ताम्रलेख) ⇒ इस लेख में क्राचल देव को कत्यूरी वंश का हंता [10 मांडलिक राजाओं का उल्लेख] बताया गया है।

* डॉ॰ यशवंत सिंह कठोच के अनुसार कत्यूरी वंश का अंत नेपाल के मल्ल शासकों ने ही किया था।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

9. वीर चंद ⇒

* वीर चंद को उत्तराखंड में खसियाराज समाप्त करने का श्रेय दिया जाता है।
* इसके समय: अशोकचल्ल का आक्रमण।

10. रूप चंद
11. लक्ष्मी चंद
12. धर्म चंद
13. कर्म चंद
14. कल्याण चंद
15. निर्भय चंद
16. नर चंद
17. नानकी चंद
18. राम चंद
19. भिकम चंद
20. मेघ चंद
21. ध्यान चंद
22. पर्वत चंद

23. थोहर चंद ⇒ (1261 से 1281 ई०) [एटकिंसन ⇢ 1261]

* विभिन्न इतिहासकारों हर्षदेव जोशी, फ्रांसिस हैमिल्टन, W. फ्रेजर के अनुसार चंद वंश का संस्थापक "थोहर चंद" था।

* इसने स्वयं को स्वतंत्र घोषित करते हुए डोटी के राजाओं को कर (Tax) देने से मना कर दिया।

Imp * कुमाऊँ का प्रथम स्वतंत्र शासक। * उत्तराधिकारी: "कल्याण चंद प्रथम"

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

24. कल्याण चंद I ⇒

* अल्मोड़ा, सीरा से प्राप्त वंशावलियों में थोहरचंद का उत्तराधिकारी कल्याण चंद को बताया गया है।

* चंपावत से प्राप्त गरुड़ ज्ञान चंद के शाके के लेख (1384) से पता चलता है कि ज्ञान चंद के पितामह (दादाजी) कल्याण चंद (प्रथम) थे।

25→ त्रिलोकी चंद

26→ डामर चंद

27→ धर्म चंद

28→ अभय चंद ⇒

* चंद वंश का प्रथम शासक जिसके विषय में प्रमाणिक जानकारी स्वयं उसके अपने अभिलेखों से मिलती है।

* अभयचंद से संबंधित अभिलेख मानेश्वर नौला (चंपावत) से प्राप्त हुआ, जिसकी ख राम सिंह (रैंचोली, पिथौरागढ़ निवासी) ने की।

* अन्य अभिलेख → चौकिली बोरा (मंदिर अभिलेख) चंपावत

* मृत्यु: 1365 ई०

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

29. गरूड़ ज्ञान चंद ⇒ (1365–1420) * सर्वाधिक लंबा कार्यकाल

* अभयचंद की संतान न होने के कारण अगला राजा उसका सहयोगी ज्ञान-चंद बना। *राजचिह्न ⇒ गरूड़ * सेनापति ⇒ नीलू कठायत [उपाधि: कुमय्या खिल्लत]

* इसके काल के 12 से अधिक अभिलेख मिल चुके हैं।

* इसने तत्कालीन दिल्ली के शासक "फिरोज शाह तुगलक" से मुलाकात की। [I^st शासक]

37 फिरोजशाह ने खडगू नामक व्यक्ति के अधीन तराई क्षेत्र (UK) ज्ञान चंद को दे दिया। (1380ई०)

* इस घटना का वर्णन "तारीख-ए-मुबारकशाही" पुस्तक में भी मिलता है।

* फिरोजशाह ने ज्ञान चंद को "गरूड़" की उपाधि दी।

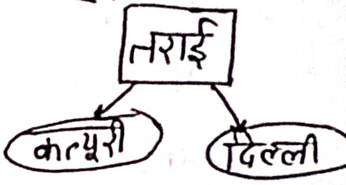

* "सोर (पिथौरागढ़) का विजेता" → ज्ञान चंद

* मझेड़ा ताम्रपत्र (Almora) में ज्ञान चंद को "श्रीराजा विजय ब्रह्म" कहा गया है।

* सेरा खड़कोट (पिथौरागढ़) ताम्रलेख में इसे "राजाधिराज महाराज" कहा गया है।

* चंद वंश में सर्वाधिक समय तक राज करने वाले शासक।

* गोवत्सा अभिलेख (कनालीछीना) के अनुसार 1418 ई० में ज्ञान चंद ने पिथौरागढ़ का कुजौली गाँव, देव राज तिवारी को दान दिया था।
("गोबासा")

*[नीलू कठायत का दुश्मन: श्रीजस्सा कमलेखी]

30 → हरिहर चंद

31 → उद्योत या उद्यान चंद ⇒ इन्होंने बालेश्वर मंदिर (चंपावत) का जीर्णोद्धार करवाया। → (सहयोग: कुंज शर्मा तिवारी)
*ज्ञान चंद का पोता। * 1 साल कर माफ।

32 → आत्म चंद II ⇒

33 → हरि चंद II ⇒

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

34. विक्रम चंद ⇒ (1423 में राज्यारोहण)

इनके ② ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं ⇒ (i) बालेश्वर मंदिर ताम्रपत्र (चंपावत)
(ii) चंपावत ताम्रपत्र

35. भारतीचंद (1437 से 1477) ⇒

* भारती चंद के (पवाड़े या भड़को या चर्चा) कुमाऊँ में बहुत प्रसिद्ध हैं।
* कुमाऊँ की प्रसिद्ध वीरांगना भागाधौन्याल के साथ उनके द्वंद के पवाड़े बहुत प्रसिद्ध हैं।
* भारती चंद ने डोटी के राजाओं से पूर्ण मुक्ति के लिए संघर्ष शुरू कर दिया।
* इस समय नेपाल में मल्ल राजाओं का शासन था। डोटी के मल्ल राजाओं ने शीरा (डीडीहाट) को अपने राज्य में मिला लिया तथा पर्वत डोटी या पर्बत डोटी का देश नाम दिया।
* डोटी के मल्लों ने शिरा (सीरा) (डीडीहाट) का शासन जिसे सौंपा उसे रैंका या राई कहा।
* भारती चंद के समय नेपाल के डोटी का शासक यक्षमल्ल तथा जयमल्ल थे। तथा शिरा (डीडीहाट) का शासक बालिनारायण संसार मल्ल था।
* मडवा गडोल में भारतीय चंद के कटकू से ज्ञात होता है कि उसने एक कटक (सेना) बनाई। इस सेना ने अपना पहला पड़ाव देवसिंह मैदान के पास कटकू नौला में लगाया।
* मल्ल राजाओं के विरुद्ध 12 वर्ष के संघर्ष के बाद भारती चंद ने मल्लों को हराया। (डुड़ैती ताम्रपत्र से जानकारी)
* भारती चंद ने अपना दूसरा पड़ाव बड़ालू से गौरीहाट तक बनाया। इस पड़ाव को वर्तमान में बालीचौड़ा कहा जाता है। * "नायक जाति" की उत्पत्ति।
* भारती चंद ने बड़ालू का शासक अपने पुत्र पर्वत चंद को बनाया।
* भारती चंद के पुत्र → (i) पर्वत चंद (खेतीखान ताम्रपत्र से जानकारी)
"सुजान कँवर" ←
(ii) रत्न चंद (डुड़ैती ताम्रपत्र से जानकारी)

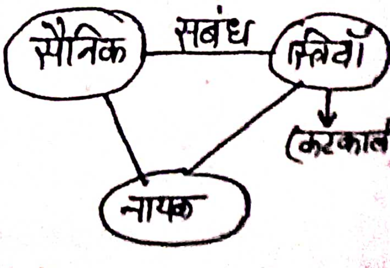

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

35. भारतीचंद (1437से 1477)⇒

* भारती चंद के (पवांड़े या भड़को या चर्चा) कुमाऊँ में बहुत प्रसिद्ध हैं।

* कुमाऊँ की प्रसिद्ध वीरांगनां भागाधौन्याल के साथ उनके द्वंद के पवांड़े बहुत प्रसिद्ध हैं।

39 ती चंद ने डोटी के राजाओं से पूर्ण मुक्ति के लिए संघर्ष शुरू कर दिया।

* इस समय नेपाल में मल्ल राजाओं का शासन था। डोटी के मल्ल राजाओं ने शीरा(डीडीहाट) को अपने राज्य में मिला लिया तथा पर्वत डोटी या पर्बत डोटी का देश नाम दिया।

* डोटी के मल्लों ने शिरा (सीरा) (डीडीहाट) का शासन जिसे सौंपा उसे रैंका या राई कहा।

* भारती चंद के समय नेपाल के डोटी का शासक यक्षमल्ल तथा जयमल्ल थे। तथा शिरा (डीडीहाट) का शासक बलिनारायण संसार मल्ल था।

* मडवा गडेल में भारतीय चंद के कटकू से ज्ञात होता है कि उसने एक कटक (सेना) बनाई। इस सेना ने अपना पहला पड़ाव देवसिंह मैदान के पास कटकू नौला में लगाया।

* मल्ल राजाओं के विरुद्ध 12 वर्ष के संघर्ष के बाद भारती चंद ने मल्लों को हराया। (डुड़ैती ताम्रपत्र से जानकारी)

* भारती चंद ने अपना दूसरा पड़ाव बड़ालू से गौरीहाट तक बनाया। इस पड़ाव को वर्तमान में बालीचौड़ा कहा जाता है। * "नायक जाति" की उत्पत्ति।

* भारती चंद ने बड़ालू का शासक अपने पुत्र पर्वत चंद को बनाया।

* भारती चंद के पुत्र → (i) पर्वत चंद (खेतीखान ताम्रपत्र से जानकारी) ← "सुजान कँवर"

(ii) रत्न चंद (डुड़ैती ताम्रपत्र से जानकारी)

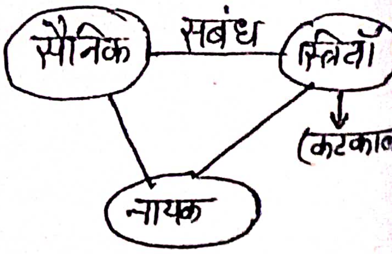

36. रतनचंद या रत्नचंद (1477-88) ⇒

* भारतीचंद के बाद उसका पुत्र रत्न चंद शासक बना। (खेतीखान ताम्रलेख)

* मल्लों के विरुद्ध विजय में इसने अपने पिता की बहुत मदद की। * डोटी के नागमल्ल को हराकर पुनः डोटी जीता।

Imp * चंदों का पहला बंदोबस्त। * सोर भी जीता।

37. कीर्तिचंद (1488-1499) ⇒ * गुरु: नागनाथ * Ist शासक गढ़वाल पर आक्रमण। (अजयपाल हारा।)

40 प्रताप चंद

39. तारा चंद

40. मानिक चंद ⇒ सूर वंश के विद्रोही "खवास खाँ" को शरण दी।

41. कल्याण चंद (कालीकल्याण चंद)

42. पूरन चंद

43. भीष्म चंद (1511-1530ई०) * [तारा चंद के पुत्र: "बालो" को गोद लिया।]

* यह चंपावत में शासन करने वाला अंतिम चंद शासक था।

* इसने अपनी राजधानी चंपावत से हटाकर खगमरा कोट (अल्मोड़ा) को बनाया।

Imp * भीष्म चंद ने ही "खगमरा का किला" बनवाया।

Imp * इनकी हत्या गजुवा नामक व्यक्ति ने कर दी।

Imp.

44. कल्याण चंद या बालो कल्याण चंद (1545-65) [अन्य नाम: प्रजा हितैषी] → by अनंतदेव

* पिथौरागढ़ के कालापानी गाड़, भेदा ताम्रपत्र में इनकी उपाधि "महाराजाधिराज श्री कल्याणचन्द देव"

* इन्होंने "मणकोट" (राजा: नारायण चंद) को अपने राज्य में मिलाकर राजधानी "चंपावत से अल्मोड़ा" (राजपुर) स्थानांतरित की। [* पूर्णतः राजधानी: अल्मोड़ा लाया।]

* "मल्ला महल" का निर्माण भी करवाया। (रुद्र चंद ने) [लालमंडी या फोर्टमोयरा]

* अल्मोड़ा की स्थापना: 1563 * नेलपोखर में महल। [वर्तमान: पल्टन बाजार]

* पत्नी: डोटी राजा हरिमल्ल की बहन। * "सोर" राज्य दहेज में मिला। * कल्याण चंद → सीराक्षेत्र चाहता था।

* सीरगढ़ ⇒ 7 बार आक्रमण but पराजित * पुरुषोत्तम पंत (सेनापति) → सीरगढ़ जीता।

Imp * पंचायती पद्धति लागू की।

UTTARAKHAND GK WITH JEEWAN

45. रुद्रचंद (1565-1597) ⇒

* ये मुगल शासक अकबर के समकालीन थे।
* इन्होंने अकबर की अधीनता स्वीकारी। (1587 ई० में) * अकबर से भेंट। (लाहौर: 1588)
* "आइने अकबरी" में कुमाऊँ को दिल्ली सूबे के तहत दर्शाया गया है।
* हुसैन खाँ ने तराई पर कब्जा कर लिया लेकिन रुद्रचंद ने इसे भगा दिया।
* रुद्र चंद ने तराई जीतकर "रुद्रपुर" नगर बसाया।

41 तराई विजय के बाद अकबर ने इसे "चौरासी माल परगना" का फरमान दिया तथा रुद्र चंद को जमींदार कहना प्रारंभ किया।

* अल्मोड़ा का "मल्ला महल" इसी ने बनवाया। * अकबर के कहने पर "नागौर लड़ाई" में भाग
* इसने "धर्म निर्णय" नामक पुस्तक लिखवाई। *

अन्य कार्य ⇒ * "चौथानी ब्राह्मणों" की मंडली बनाई।

* अनाज का 6th भाग -राजधानी पहुँचाने का कार्य कैनी खश करते थे।
* घरों में सेवा कार्य के लिए छ्योड़े / छ्योड़ियाँ रहती थीं।
* सीरी (डीडीहाट) को संपूर्णतया अपने अधीन लेकर बंदोबस्त करवाया।
* Imp* सेनापति: पुरुषोत्तम पंत [सीरा (डीडीहाट) जीता।]
* ग्वालदम (बधाणगढ़) युद्ध ⇒ [1581] Vs बलभद्र शाह, सुकाल देव। [पुरुषोत्तम पंत मारा गया।]
  - → हत्या: रुद्र चंद
  - (सुकाल देव) अंतिम कत्यूरी राजा
* पुत्र: • शक्ति गुंसाई [कुमाऊँ का धृतराष्ट्र]
  • लक्ष्मीचंद
* "औली ब्राह्मण"
* संस्कृत अध्ययन के लिए युवाओं को: कश्मीर, काशी भेजा।

** पुरुषोत्तम पंत ⇒ उपनाम: पुरखु पंत * पिता: मराठी ब्राह्मण "जयदेव"

* सीरागढ़ के राजा "हरिमल्ल" को हराया। * सीरागढ़ विजय → कल्याण चंद की पत्नी → "सती"
* ग्वालदम युद्ध / बधाण गढ़ युद्ध ⇒ पुरुषोत्तम पंत मारा गया।
  - → * गढ़वाल का राजा : "बलभद्र शाह"
  - → * 1581

UTTARAKHAND GK WITH JEEWAN

46. लक्ष्मीचंद (1597 ई०) * [गढ़वाल का शासक : मानशाह] * 7 बार गढ़वाल पर आक्रमण।

* अन्य नाम :- लक्ष्मीचंद, लक्ष्मिनचंद (मूनाकोट ताम्रपत्र में)
लक्ष्मण (मानोदय काव्य में) * "लखुली बिराली"

* लक्ष्मी चंद का बड़ा भाई शक्ति गुसाईं जो जन्म से अंधा था, प्रशासनिक व्यवस्था वही देखता था। * सेनापति : गैंडा सिंह

* शक्ति गुसाईं ने न्यौवाली कचहरी (समस्त जनता के लिए)
बिष्टाली कचहरी (केवल सैनिकों के लिए) का निर्माण करवाया।

* राज्य कर्मचारियों की ③ श्रेणियाँ थी →
(i) सरदार → परगने का शासक।
(ii) फौजदार → सेना का अधिकारी।
(iii) नेगी → राज्य के अन्य (छोटे) कर्मचारी।

* लक्ष्मीचंद ने अनेक उद्यान (नरसिंह बाड़ी, पांडे खोला, कबीना, लक्ष्मीश्वर) खुलवाये।

* 1602 ई० बागनाथ मंदिर (बागेश्वर) का जीर्णोद्धार करवाया।

* अल्मोड़ा से प्राप्त वंशावली के आधार पर इसके 22 पुत्र थे।

* खतड़वा / खतेड़वा त्यौहार ⇒ गढ़वाल में जब इसे मुश्किल से एक छोटे स्थान पर सफलता मिली तो इसकी सूचना पर्वत की चोटी में आग लगाकर भेजी गयी। तभी से यह त्यौहार प्रचलित है। (गढ़वाल का राजा → मानशाह था।)
[खतड़ सिंह मारा गया।]

Imp * लक्ष्मीचंद ने चंद शासन व्यवस्था का पुनर्गठन किया जो कि रैका शासन व्यवस्था पर आधारित था।

* जहाँगीर से भेंट। [तुजुक-ए-जहाँगीरी]

47. दिलीप चंद (1621-24) लक्ष्मण चंद का पुत्र। * क्षयरोग से मृत्यु।

48. विजय चंद (1624-25) → लक्ष्मण चंद का पुत्र।
* इसकी हत्या त्रिमल चंद ने करवायी।

UTTARAKHAND GK WITH JEEWAN

49. त्रिमल चंद (1625-1638) ⇒ लक्ष्मीचंद का पुत्र।

* गड्यूड़ा ताम्रपत्र में इसे महाराजकुमार (युवराज) कहा गया है।
* त्रिमल चंद ने दखाता तथा ध्यानीरौ के खशों का विद्रोह दबाया।
* त्रिमल चंद निसंतान था। अतः यह अपने परिवार के ही राजकुमार बाजबहादुर चंद को अपना उत्तराधिकारी मानता था। (त्रिमल, बाजबहादुर को नारायण कहता था।)

50. बाज बहादुर चंद (1638-1678) ⇒ [चरवाहा]

* गद्दी पर बैठने के बाद यह शाहजहाँ के दरबार में गया।
* शाहजहाँ से तराई के नौलाखिया माल व चौरासीमाल क्षेत्र कटेहरी राजपूतों से छुड़वाना चाहता था। (इस कार्य में मुरादाबाद शासक (रुस्तम खाँ) ने मदद की)
* शाहजहाँ ने पूरा कटेहर क्षेत्र बाज बहादुर को दे दिया।
* शाहजहाँ ने इसे बहादुर तथा जमींदार की उपाधि दी।
* इसने अपने नाम से "बाजपुर" शहर बसाया।
* 1673ई० में मानसरोवर यात्रियों के लिए गूंठ के रूप में भूमि दान दी।
* एकहथिया देवाल (थल) का निर्माण करवाया। इस मंदिर की बनावट एलोरा के कैलाश मंदिर जैसी है।
* गोल्ल मंदिर (घोड़ाखाल) का निर्माण करवाया।
* भोटियाओं, शौकाओं द्वारा तिब्बतियों को दी जाने वाली "दस्तूर" पर रोक लगा दी। (बाद में फिर से प्रारंभ करवा दी।)
* चंद राजवंश में सर्वाधिक सीमा विस्तार, संपूर्ण कुमाऊँ का एकीकरण इसी के समय हुआ।
* 1669ई० में इसने सोर क्षेत्र की यात्रा की। सोर को "खड़ायत का परगना" कहा जाता था।
* बाजबहादुर चंद ने भोटियों व तिब्बतियों से "सिरती कर" वसूला।
* इसका एक चित्र : न्यूयॉर्क संग्रहालय"
* कहावत: "बसा भयो अस्सी, बुद्धि गयी नस्सी।"

* बाज बहादुर के दरबार में काम करने वाले कर्मचारी निम्नलिखित नामों से जाने जाते थे →
  - (i) पानी भरने वाले → पनेरू
  - (ii) फल लाने वाले → फुलेरिया
  - (iii) मंदिरों की रक्षा करने वाले → मठपाल

* बाज बहादुर ने कत्यूरी राजाओं के गढ़ मनिया गढ़ पर हमला करके वहाँ के राजकुमारों को पीछे धकेल दिया।

44 इस कठिन समय में गोला रावत भूप सिंह थोकदार की पत्नी तीलू रौतेली ने विद्रोहियों को हराने के लिए आना पड़ा था।

तीलू → गढ़वाल की झाँसी की रानी
रौतेली → जॉन ऑफ आर्क

51. उद्योत चंद (1678-1698) :(बाजबहादुर चंद के पुत्र)

* ये भारती चंद के बाद पहले राजा थे जिंहोने नेपाल पर आक्रमण किया।
* इनका ताम्रपत्र → बरम (मुवानी, पिथौरागढ़) से मिला।
* इस ताम्रपत्र में उद्योत चंद की धाईमाता की बीमारी का उल्लेख है। इनकी बीमारी राजवैद्य वरदेव जोशी ने ठीक किया।
* इन्होंने त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, पार्वतीश्वर मंदिर, उद्योतचंदेश्वर मंदिर बनवाये।
* डोटी, अजमेरगढ़ (नेपाल) पर विजय के बाद चंदजी ने 1682ई० में प्रयागराज के रघुनाथपुर घाट में स्नान किया।
* इन्होंने गढ़वाल के राजा मेदिनी शाह व डोटी नरेश देवपाल को हराया।
* पहली बार डोटी नरेशों ने चंदों को कर (Tax) देना प्रारंभ किया।
* अल्मोड़ा में "तल्लामहल" किले का निर्माण किया।

52. ज्ञानचंद (1698-1708)

* ज्ञानचंद का प्रथम ताम्र अभिलेख : 1698 में प्राप्त
* इसका पहला आक्रमण पिंडर घाटी (गढ़वाल) पर हुआ।
* 1699 ई० में इन्होंने बधाणगढ़ को लूटा तथा यहाँ से नंदादेवी की स्वर्णप्रतिमा को नंदादेवी मंदिर (अल्मोड़ा) में स्थापित करवाया।
* बधाणगढ़ के आक्रमण में गढ़वाल के वीरेश्वर जोशी ने इनकी मदद की।

* के द्वारा बनाये गये मंदिरों को देवल या दुयौल कहा जाता था।
* इन्होंने चौपाता, नकुलेश्वर मंदिर, कासनी, मर्सोली मंदिर पिथौरागढ़ में बनवाये।

53. जगत चंद (1708-1720) ⇒

* यह चंदों का सर्वाधिक ख्याति प्राप्त शासक था।
* तराई भाग से 9 लाख रूपये की आय होती थी, अतः विद्वानों ने इसके काल को "कुमाऊँ का स्वर्णकाल" कहा जाता है।
* इनका गढ़वाल नरेश फतेहशाह से श्रीनगर में युद्ध हुआ जिसमें फतेहशाह भागकर देहरादून चला गया। (श्रीनगर जीत लिया।)
* इसने मुगल बादशाह बहादुरशाह प्रथम से मैत्रीपूर्ण संबंध रखे।
* फतेहशाह ने श्रीनगर, गरुड़, बैजनाथ घाटी जीतकर गरसार गाँव को बद्रीनाथ मंदिर को भेंट स्वरूप दे दिया।
* इनकी मृत्यु चेचक रोग से हुई।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

46

50. बाज बहादुर चंद (1638-1678) ⇒

* गद्दी पर बैठने के बाद यह शाहजहाँ के दरबार में गया।

* शाहजहाँ से तराई के नौलाखिया माल व चौरासीमाल क्षेत्र कटेहरी राजपूतों से छुड़वाना चाहता था। (इस कार्य में मुरादाबाद शासक (रुस्तम खाँ) ने मदद की)

* शाहजहाँ ने पूरा कटेहर क्षेत्र बाज बहादुर को दे दिया।

* शाहजहाँ ने इसे बहादुर तथा जमींदार की उपाधि दी।

* इसने अपने नाम से "बाजपुर" शहर बसाया।

* 1673ई० में मानसरोवर यात्रियों के लिए गूंठ के रूप में भूमि दान दी।

* एकहथिया देवाल (थल) का निर्माण करवाया। इस मंदिर की बनावट एलोरा के कैलाश मंदिर जैसी है।

* गोल्लू मंदिर (घोड़ाखाल) का निर्माण करवाया।

* भोटियाओं, शौकाओं द्वारा तिब्बतियों को दी जाने वाली "दस्तूर" पर रोक लगा दी। (बाद में फिर से प्रारंभ करवा दी।)

* चंद राजवंश में सर्वाधिक सीमा विस्तार, संपूर्ण कुमाऊँ का एकीकरण इसी के समय हुआ

* 1669ई० में इसने सोर क्षेत्र की यात्रा की। सोर को "खड़ायत का परगना" कहा जाता था

* बाजबहादुर चंद ने भोटियों व तिब्बतियों से "सिरती कर" वसूला।

* इसका एक चित्र : न्यूयॉर्क संग्रहालय"

* कहावत: "बरस भयो अस्सी, बुद्धि गयी नस्सी।"

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

47

* बाज बहादुर के दरबार में काम करने वाले कर्मचारी निम्नलिखित नामों से जाने जाते थे →

(i) पानी भरने वाले → पनेरू

(ii) फल लाने वाले → फुलेरिया

(iii) मंदिरों की रक्षा करने वाले → मठपाल

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

51. उद्योत चंद (1678-1698) :(बाजबहादुर चंद के पुत्र)

ये भारती चंद के बाद पहले राजा थे जिंहोने नेपाल पर आक्रमण किया।

* इनका ताम्रपत्र → बरम (मुवानी, पिथौरागढ़) से मिला।

* इस ताम्रपत्र में उद्योत चंद की धाईमाता की बीमारी का उल्लेख है। इनकी बीमारी राजवैद्य वरदेव जोशी ने ठीक किया।

* इन्होंने त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, पार्वतीश्वर मंदिर, उद्योतचंदेश्वर मंदिर बनवाये।

* डोटी, अजमेरगढ़ (नेपाल) पर विजय के बाद चंदजी ने 1682ई० में प्रयागराज के रघुनाथपुर घाट में स्नान किया।

* इन्होंने गढ़वाल के राजा मेदिनी शाह व डोटी नरेश देवपाल को हराया।

* पहली बार डोटी नरेशों ने चंदों को कर (Tax) देना प्रारंभ किया।

* अल्मोड़ा में "तल्लामहल" किले का निर्माण किया।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEETWAN

52. ज्ञान चंद (1698-1708)

* ज्ञानचंद का प्रथम ताम्र अभिलेख : 1698 में प्राप्त
* इसका पहला आक्रमण पिंडर घाटी (गढ़वाल) पर हुआ।
* 1699 ई० में इन्होंने बधाणगढ़ को लूटा तथा यहाँ से नंदादेवी की स्वर्णप्रतिमा को नंदा देवी मंदिर (अल्मोड़ा) में स्थापित करवाया।
* बधाणगढ़ के आक्रमण में गढ़वाल के वीरेश्वर जोशी ने इनकी मदद की।
* इनके द्वारा बनाये गये मंदिरों को देवल या दुयौल कहा जाता था।
* इन्होंने चौपाता, नकुलेश्वर मंदिर, कासनी, मर्सोली मंदिर पिथौरागढ़ में बनवाये।

49

53. जगत चंद (1708-1720) ⇒

* यह चंदों का सर्वाधिक ख्याति प्राप्त शासक था।
* तराई भाग से 9 लाख रुपये की आय होती थी। अतः विद्वानों ने इसके काल को "कुमाऊँ का स्वर्णकाल" कहा जाता है।
* इनका गढ़वाल नरेश फतेहशाह से श्रीनगर में युद्ध हुआ जिसमें फतेहशाह भागकर देहरादून चला गया। (श्रीनगर जीत लिया।)
* इसने मुगल बादशाह बहादुरशाह प्रथम से मैत्रीपूर्ण संबंध रखे।
* फतेहशाह ने श्रीनगर, गरुड़, बैजनाथ घाटी जीतकर गरसार गाँव को बद्रीनाथ मंदिर को भेंट स्वरूप दे दिया।
* इनकी मृत्यु चेचक रोग से हुई।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEVAN

54. देवी चंद (1720-26) इसके समय से चंद वंश का अवनति(ढलान) प्रारंभ हुआ।

* इसे " कुमाऊँ का मोहम्मद बिन तुगलक " कहा जाता है।

* बरम ताम्रपत में इसे महाराज कुमार श्री देवी सिंह गुंसाई

* झिझाड़ (चंपावत) ताम्रपत्र में इसे " महाराजकुमार श्री देवी सिंह गुँसाई ज्यू" कहा गया है

* इसने रोहिला सरदार "दाउद खाँ" से युद्ध किया।

* 1726 में दरबारियों ने इसकी हत्या करवा दी।

55. अजीत चंद (1726-30)

56. कल्याण चंद चतुर्थ (1730 to 1747)

* इसके समय में रोहेलों का आक्रमण हुआ।

* इसे गद्दी पर बैठाने में " करन भट्ट " ने प्रमुख भूमिका निभाई।

* अल्मोड़ा में चौमहल निर्माण करवाया। (अन्य नाम: राजबुंगा का किला)

* 1743-44 में रुहेलखण्ड के कटेहर सरदार अली मोहम्मद खाँ ने कुमाऊँ पर आक्रमण किया।

* इसी समय अवध के नवाब मंसूर अली खाँ ने तराई पर अधिकार कर लिया।

* रोहेलों व कुमाऊँ सेना के मध्य भीमताल में भीषण युद्ध हुआ तथा कल्याण चंद भागकर देहरादून चला गया। कल्याण चंद की मदद गढ़ नरेश प्रदीप शाह ने की।

* अंत समय में ये अंधे हो गये थे।

* कवि शिव ने " कल्याण चन्द्रोदयम" पुस्तक की रचना की।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

57. दीप चंद (1748 - 1777) * संरक्षक : शिवदेव जोशी [कुमाऊँ का बैरम खाँ]

* कुमाऊँ का रंगीला बादशाह। * पानीपत का 3rd युद्ध। (सेनापति : हरिराम)
* शिवदेव जोशी के पुत्र → हर्षदेव जोशी * 1764 : शिवदेव जोशी
* उपनाम → गूंगा शासक [F. हैमिल्टन] * दीपचंद की पत्नी : शृंगारमंजरी → दीवान : परमानंद बिष्ट
→ सेनापति : मोहन सिंह गुंसाई

58 ⇒ मोहन चंद (1777 - 1779) : खूनी शासक
* हर्षदेव ने डोटी व गढ़ नरेश ललितशाह से मदद। * बग्वाली पोखर युद्ध → मोहन चंद हारा।
* अगला शासक : ललित शाह का पुत्र प्रद्युम्न शाह।

59 ⇒ प्रद्युम्न शाह या प्रद्युम्न चंद : गढ़वाल नरेश जयकृत शाह से संघर्ष। (गढ़नरेश : आत्महत्या)
* कुमाऊँ : हर्षदेव जोशी के अधीन * मोहन चंद का आक्रमण * अगला राजा

51

शिव चंद ⇒ (61) : हर्षदेव जोशी ने मोहनचंद को हराया। * लाल सिंह भागकर : रामपुर,
अगला शासक : शिव चंद [मिट्टी का महादेव]
* लालसिंह का आक्रमण। * अगला शासक : महेंद्रचंद [मोहनचंद का पुत्र]
(62)

महेंद्र चंद (1790) ⇒ [62]

* चंद वंश का अंतिम राजा। * हर्षदेव ने डोटी नरेश रण बहादुर शाह को कुमाऊँ आक्रमण के लिए आमंत्रित किया।
* हवलबाग का युद्ध (1790) हार गया।
(गोरखा व चंदों के मध्य)
* कुमाऊँ में गोरखा शासन [1790 से 1815]

UTTARAKHAND GYAN WITH SHEWAK

** चंदों का प्रशासनिक ढांचा

* महमूद गजनवी के आक्रमण के समय शासक ⇒ सोमचंद
* कत्यूरी राजाओं की उपाधि ⇒ "रजबार"
* चंद राजाओं की उपाधि ⇒ श्रीराजाधिराज, महाराजाधिराज
* ताम्रपत्र के उत्कीर्णकों को ⇒ सुनार / सुदार
* ताम्रपत्रों के लेखक ⇒ जोशी / जोइसी
* एकमात्र चंद शासक जिसके ताम्रपत्र में उसके पिता का नाम मिलता है ⇒ राजा जगतचंद [बरम ताम्रपत्र]
* राजधानी के लिए प्रयुक्त शब्द : बुंगा / राजापुर / राजधाई।

* बक्शी ⇒ राजाओं के सेनापति। * परामर्शदाता ⇒ महरा व फर्त्याल

पौरी पन्द्रह विश्वा ⇒ राजाओं के परामर्शदाता।

* दीवान या प्रधानमंत्री ⇒ जोशी

*
- राज्य
- ↓ मंडल
  - → 1. सामंतों के अधीन [सामंत अन्य नाम : ठक्कुर, उपाधि : रजबार]
  - → 2. राजा द्वारा शासित
- ↓ देश
  - → तल्ला देश
  - → मल्ला देश
- ↓ परगना
  - → नागरिक अधिकारी के अधीन, [Head : सीकदार]
  - → सैनिक कमांडर के अधीन। [Head : बक्शी]
- ↓ गर्खे → मुखिया : नेगी
- ↓ ग्राम → मुखिया : सयाना / बूढ़ा

* सीराकोट कारागार → इसमें राजा दीपचंद को रखा गया था।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

**** भू-राजस्व नीति ⇒**

* थातवान ⇒ इसे राजा रौत, गूंठ के रूप में जमीन देता था।

* सिरतान ⇒ नकद कर देता था।

* कैनी ⇒ ये "भू-दास" होते थे!

* रौत या पुरस्कार ⇒ राजा द्वारा किसी व्यक्ति को दी जाने वाली जमीन।

* गल्ला छहाड़ा ⇒ भूराजस्व * अनाज का छठा भाग।

* पधान का पद ⇒ वंशानुगत। * कोटल ⇒ पधान के अधीन। * पधान का लेखक।

* विष्णुप्रीति या गूंठ भूमि ⇒ मंदिरों को दान दी जाती थी।

* बिश्वा → 20 नाली या 1 एकड़ जमीन।

* विश्वा ⇒ अस्कोट के रजबारों के सेवक।

* छतीसी ⇒ चंदों के समय के 36 कर।

* औताली ⇒ राजा की जमीन।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

* ज्यूलिया कर ⇒ (अन्य नाम : सांगा) नदी पुलों पर लगने वाला कर।
* सिरती कर ⇒ माल भाबर, भोटिया व्यापारियों से। (नकद कर)
* राखिया कर ⇒ रक्षाबंधन, व जनेऊ संस्कार के समय।
* मांगा कर ⇒ युद्ध के समय लिया जाने वाला कर।
* खेनी कर ⇒ कुली बेगार कर।
* बेकर ⇒ अनाज के रूप में देय कर।
* कटक कर ⇒ सेना के लिए लिया जाने वाला कर।
* टांड कर ⇒ सूती वस्त्रों के बुनकरों से लिया जाने वाला कर।
* मिझारी कर ⇒ कामगारों से लिया जाने वाला कर।
* साहू कर ⇒ (अन्य नाम: साउलि) लेखक को देय कर।
* रंतगली कर ⇒ लेखक को देय कर। (मूनाकोट ताम्रलेख के अनुसार)
* कूत ⇒ नकद के बदले दिया जाने वाला अनाज।
* कनक कर ⇒ शौका व्यापारियों से
* डाला कर ⇒ गाँव के सयाने को देय कर।
* मो कर ⇒ हर परिवार पर लगा कर।
* भाग कर ⇒ घराटों पर लगने वाला कर।
* रोल्य देवल्या कर ⇒ राजपरिवार के देवी देवताओं की पूजा के नाम।
* बजनिया कर ⇒ राजा के नर्तकों के लिए।
* चोपदार ⇒ राजा के सामान ढोने वालों के लिए।
* घोड़्यालों ⇒ राजा के घोड़ों के लिए।
* कमीनचारी/सयानचारी ⇒ सयानों को देय कर।
* हिलयानि/अधूल कर ⇒ बरसात में सड़कों की मरम्मत के लिए लिया जाने वाला कर।
* पौरी कर ⇒ राजधानी की रखवाली के लिए देय कर।
* बाजदार ⇒ महाजनों को देय कर।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

** गढ़वाल का परमार / पवार राजवंश

...त्वपूर्ण तथ्य ⇒

* विकेट के अनुसार ⇒ पवार वंश का संस्थापक : कनकपाल [11 वर्ष शासन, 51 साल में निधन।]
* 9वीं सदी तक → गढ़वाल में 52 ठकुरी राजाओं का शासन। [एकगढ़ : चाँदपुरगढ़]
* चाँदपुर गढ़ का राजा : भानुप्रताप (सोनपाल)
* हरिकृष्ण रतूड़ी, एटकिंसन के अनुसार → कनकपाल [धारनगरी (गुज०) से चाँदपुरगढ़ आया था।]
* पवारों की प्रथम राजधानी : चाँदपुरगढ़ (चमोली)
* पातीराम जी अपनी पुस्तक गढ़वाल एन्शियंट एंड मॉडर्न में कनकपाल को "मालवा" निवासी बताते...
* कनकपाल के आने का प्रमाण : आदिबद्री मंदिर [शैली : गुजरात के सोलंकी मंदिर समान।]

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

कुछ इतिहासकारों का यह भ्रम है कि कनकपाल 'धारा नगरी' से आये थे। परमारों ही के वंशज ठा० शूरबीरसिंह पुराना दरबार टिहरी के संग्रह में कुछ ऐसे पत्र रखे हुये हैं जो इस भ्रान्ति का निवारण कर देते हैं।

सन् 1927 में टिहरी राज्य के दीवान रायबहादुर चक्रधर जुयाल ने 23 मई को पत्रांक 560/सी के अन्तर्गत, भेजने की तिथि 13 जून 1927, इन्डोर्समैन्ट नम्बर 1839/50/26–27 'धार' दरबार को भेजा था।

इस पत्र के उत्तर में 'धार' दरबार ने दि० 10 दिसम्बर 1927 को पत्र संख्या 1004 के अन्तर्गत 'धार' के इतिहास अधिकारी के पत्र–संख्या, 17 दिनांक 22 जुलाई 1927 को नत्थी कर टिहरी दरबार के लिये भेजा था। इस पत्र में साफ शब्दों में इस बात की पुष्टि की गई है कि कनकपाल एवं 'धारा नगरी' के राजवंश में कोई सम्बन्ध नहीं है।

अस्तु, अब यह प्रमाणित हो जाता है कि कनकपाल गुर्जर देश से ही आये थे। श्री कन्हैया लाल माणिकलाल मुन्शी द्वारा रचित "दिग्लौरी दैट वॉज गूजर देश" में बिख्यात लेखक ने राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश का एक भाग मालवा तथा गुजरात का सामूहिक नाम गुर्जर प्रदेश कहा है।

1. कनकपाल ⇒ (888 से 898)
* ~~सं~~ संस्थापक * धारनगरी (गुजरात) * भानुप्रताप (कत्यूरी) की पुत्री से विवाह।
राजधानी: चाँदपुरगढ़

24. सोनपाल [1243 – 1250] ⇒ राजधानी: भिलंग घाटी * खसों को हराया।

28. लखनदेव [1310 – 1330] ⇒ * अपने नाम से मुद्रा छापने वाला प्रथम शासक। * भिलंग घाटी 1st स्वतंत्रशास
* इसकी मुद्रा: पुराना दरबार संग्रह (टिहरी)

34. जगतपाल (1444 – 1460) ⇒ इसका ताम्रपत्र: रघुनाथ मंदिर [1455] * रजबार कहा गया है।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

37. अजयपाल [1490 – 1519] → पिता: आनंदपाल II (36th शासक)

* पंवार वंश का संस्थापक। (राहुल सांकृत्यायन) * गढ़पाल [पातीराम ने।] * गढ़वाल का नेपोलियन
* गढ़वाल का कृष्ण * गढ़वाल का अशोक * आदिनाथ [साँवरी ग्रंथ by शूरवीर सिंह]
* इसका तुलना: कृष्ण, भीम, युधिष्ठिर, कुबेर, इंद्र से [कवि भरत की पुस्तक मानोदय काव्य]
* 52 गढ़ विजय। (एकमात्र शासक) * सिकंदर लोदी का समकालीन। * केंद्रीय सेना निर्माण।
* मापतौल के लिए: धूलिपाथा (धर्मपाथा) की व्यवस्था। (2 kg.)
* 1491 ⇒ कीर्तिचंद ने बधाणगढ़ युद्ध में हराया। (1492 में अजयपाल जीता।)
* राजधानी ⇒ 1512: देवलगढ़ * 1517: श्रीनगर
* कफ्फू चौहान ⇒ उप्पू गढ़ (टिहरी) शासक। [कथन ÷ मैं पशुओं में सिंह व पक्षियों में गरुड़ की तरह हूँ।]
* इसके लिए अजयपाल ने कहा: "वीर तुम जीते, हम हारे।"
* अजयपाल के गुरु: सत्यनाथ [देवलगढ़ में समाधि।] * कत्यूरियों से स्वर्ण सिंहासन छीना।
* अजयपाल: "गोरखनाथ पंथ" * "सरोला ब्राह्मण" की नियुक्ति।
* विष्णु मंदिर (देवलगढ़) दीवार पर: अजयपाल चित्र (पद्मासन मुद्रा में।)
* उत्तराधिकारी: कल्याण शाह/पाल

UTTARAKHAND GYAN WITH SHIVA JEWAN

* 41. विजयपाल ⇒ दापा (तिब्बत) पर आक्रमण करने वाला प्रथम शासक। [असफल]

* 42. सहजपाल ⇒ [1547 – 1575] ⇒ अकबर का समकालीन * अकबर ने गंगा का स्त्रोत पता लगाने का प्रय[ास] [हरिद्वार में रोका।]
  * "राजनीतिक चतुर + प्रजा को सुख देने वाला शासक।" * 5 अभिलेख (रघुनाथ मंदिर।)

* 43. बलभद्रशाह [1575 – 1591] ⇒ * शाह उपाधि [1st शासक] * राजदूत भेजने की प्रथा शुरू।
  * अकबरनामा में नाम: रामशाह / बलरामशाह * तुलना: भीमसेन से (by कवि देवराज)
  * ग्वालदम का युद्ध (1581) ⇒ बलभद्रशाह व रुद्रचंद (हारा।) के मध्य। [सेनापति: पुरुषोत्तम पंत मारा गया।]
  * युद्ध जीतने के बाद इसने: बहादुरशाह (उपाधि।)

44 * मानशाह [1591 – 1611] ⇒ इसके समकालीन: रुद्रचंद, लक्ष्मीचंद, अकबर, जहाँगीर, जीतू बगड़वाल
  * तिब्बत [दापा] विजय करने वाला 1st शासक। * दापा शासक इसे: सवा सेर सोना + चार सींग वाला मेंढ़ा] कर
  * दापा से प्राप्त स्वर्णकलश: देवलगढ़ (गौरजा मंदिर को समर्पित।)
  * लक्ष्मीचंद के ⑦ असफल आक्रमण। * 8वें आक्रमण में गढ़वाल सेनापति: (खतड़सिंह) मारा गया।
  * मानोदय काव्य ÷ * भाषा: संस्कृत * लेखक: कवि भरत * मानशाह को सूर्य के समान तेजस्वी,
    * कवि भरत ने जहाँगीर को 'ज्योतिकराय' की उपाधि। * राजा बलि के समान दानवान
    * मानपुर (श्रीनगर में) बसाया। * मान सिंह का सेनापति: नंदी
  * मान सिंह ने "कालो सिंह भंडारी" को "स्वर्णिम विजेता" की उपाधि दी।

UTTARAKHAND WITH JEEVAN

37. अजयपाल [1490 – 1519] ⇒ पिता: आनंदपाल II (36th शासक)

* पंवार वंश का संस्थापक। (राहुल सांकृत्यायन) * गढ़पाल [पातीराम ने।] * गढ़वाल का नेपोलियन
* गढ़वाल का कृष्ण * गढ़वाल का अशोक * आदिनाथ [साँवरी ग्रंथ by शूरवीर सिंह]
* इसका तुलना: कृष्ण, भीम, युधिष्ठिर, कुबेर, इंद्र से [कवि भरत की पुस्तक मानोदय काव्य]

60

* 52 गढ़ विजय। (एकमात्र शासक) * सिकंदर लोदी का समकालीन। * केंद्रीय सेना निर्माण।
* मापतौल के लिए: धूलिपाथा (धर्मपाथा) की व्यवस्था। (2 kg)
* 1491 ⇒ कीर्तिचंद ने बधाणगढ़ युद्ध में हराया। (1492 में अजयपाल जीता।)
* राजधानी ⇒ 1512: देवलगढ़ * 1517: श्रीनगर
* कफ्फू चौहान ⇒ उप्पू गढ़ (टिहरी) शासक। [कथन ⇒ मैं पशुओं में सिंह व पक्षियों में गरुड़ की तरह हूँ।]
  * इसके लिए अजयपाल ने कहा: "वीर तुम जीते, हम हारे।"
* अजयपाल के गुरु: सत्यनाथ [देवलगढ़ में समाधि।] * कत्यूरियों से स्वर्ण सिंहासन छीना।
* अजयपाल: "गोरखनाथ पंथ" * "सरोला ब्राह्मण" की नियुक्ति।
* विष्णु मंदिर (देवलगढ़) दीवार पर: अजयपाल चित्र (पद्मासन मुद्रा में।)
* उत्तराधिकारी: कल्याण शाह/पाल

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

* 41. विजयपाल ⇒ दापा (तिब्बत) पर आक्रमण करने वाला प्रथम शासक। [असफल]

* 42. सहजपाल ⇒ [1547 – 1575] ⇒ अकबर का समकालीन * अकबर ने गंगा का स्रोत पता लगाने का प्र [हरिद्वार में रोका।]
* "राजनीतिक चतुर + प्रजा को सुख देने वाला शासक।" * 5 अभिलेख (रघुनाथ मंदिर।)

* 43. बलभद्रशाह [1575 – 1591] ⇒ * शाह उपाधि [I^st शासक] * राजदूत भेजने की प्रथा शुरू।
* अकबरनामा में नाम: रामशाह / बलरामशाह * तुलना: भीमसेन से (by कवि देवराज)
* ग्वालदम का युद्ध (1581) ⇒ बलभद्रशाह व रूद्रचंद (हारा।) के मध्य। [सेनापति: पुरुषोत्तम पंत मारा गया।]
61
* युद्ध जीतने के बाद इसने: बहादुरशाह (उपाधि।)

44 * मानशाह [1591 – 1611] ⇒ इसके समकालीन: रूद्रचंद, लक्ष्मीचंद, अकबर, जहाँगीर, जीतू बगड़वाल
* तिब्बत [दापा] विजय करने वाला I^st शासक। * दापा शासक इसे: सवा सेर सोना + चार सींगवाला मेंढ़ा]
* दापा से प्राप्त स्वर्णकलश: देवलगढ़ (गौरजा मंदिर को समर्पित।)
* लक्ष्मीचंद के ⑦ असफल आक्रमण। * 8वें आक्रमण में गढ़वाल सेनापति :(खतड़सिंह) मारा गया।
* मानोदय काव्य ÷ * भाषा: संस्कृत * लेखक: कवि भरत * मानशाह को सूर्य के समान तेजस्वी,
* कवि भरत ने जहाँगीर को 'ज्योतिकराय' की उपाधि। * राजा बलि के समान दानवान
* मानपुर (श्रीनगर में) बसाया। * मान सिंह का सेनापति: नंदी
* मान सिंह ने "कालों सिंह भंडारी" को "स्वर्णिम विजेता" की उपाधि दी।

UTTARAKHAND GK WITH JEEWAN

15. श्यामशाह :→(1611-1631)* मानशाह का पुत्र।

उल्लेख: जहाँगीरनामा में (श्याम सिंह) * मुगलों (जहाँगीर) से भेंट करने वाला प्रथम शासक।

* जहाँगीर ने इसे: घोड़े, हाथी उपहार। * त्रिमलचंद को शरण। (लक्ष्मीचंद का पुत्र)

* उपाधि ⇒ घमंडी राजा / विलासी राजा / गढ़वाल का तुगलक

* गुरु ⇒ शंकरदेव [ग्रंथ: वास्तु शिरोमणि] * 1624: पादरी अंटोनियो दी एंड्राडे का आगमन।

* 1625: महिपतिशाह ने केशोराय मठ की स्थापना। * निधन: अलकनंदा में डूबने से।

* इसकी 60 रानियाँ सती हो गयीं। * दाह संस्कार में उपस्थित पादरी: "पादरी अजेवेदो"

UTTARAKHAND GK AT WITH JEEWAN

46. महिपति शाह [1631-1635] ⇒ श्यामशाह का चाचा। *उपाधि: गर्वभंजन *पत्नी: कर्णावती

*सर्वाधिक उम्र में शासक। *सेनापति ⇒ लोदी रिखोला [गढ़वाल का रखवाला], *बनवारी दास (मौलाराम वंशज)
*माधो सिंह भंडारी [गर्व भंजक]

*रोरी सूची प्रथा। *अन्य नाम ⇒ महाप्रचंड भुजदंड (मौलाराम) * अक्खड़ राजा (मुगल लेखक)

*तिब्बत (दापा) पर 3 आक्रमण। [रुंडाड्रे अनुसार] * नागा साधुओं की हत्या। * कुमाऊँ युद्ध में बलिदान

*माधो सिंह भंडारी ⇒ जन्म: मलेथा (टिहरी) *मलेथा की गूल के निर्माता। [चकमा/डागरनदी, 225 फीट]
* रघुनाथ मंदिर (देवप्रयाग) के द्वार के अभिलेख में इनके पुत्र गजे सिंह व पुत्रवधू मथुरा बौराणी का उल्लेख।
* तुमुल युद्ध (1640ई०) में वीरगति। [सतलज नदी के तट पर]

*रानी कर्णावती ⇒ महिपति शाह के बाद अगले शासक इनके पुत्र: पृथ्वीपतिशाह [संरक्षिका: रानी कर्णावती]
* 1636: शाहजहाँ के सेनापति नवाजत खाँ को हराया। [उपाधि: नाक कटनीरानी by चारण जी।] (तारा बाई, रानी दुर्गावती)
* राजपुर नहर निर्माण। * करनपुर शहर (देहरादून) बसाया। * रानी का महल: नवादा [देहरादून] राजधानी

UTTARAKHAND GYAN WITH DEEWAN

*पृथ्वीपति शाह [1635 – 1664] *शासक बनते समय : 7 वर्ष *गद्दी : 1640

* मंधाता प्रकाश (सिरमौर शासक) से : हाटकोटी संधि (1650) *गढ़वाली चित्रकला प्रारंभ। (1658)

* 2nd राजधानी : राजगढ़ी [शासक: दिलीप शाह] *1655: खलीतुल्ला के नेतृत्व में शाहजहाँ का आक्रमण।

* मुगल शहजादे "सुलेमान शिकोह" को शरण दी। (1658) * मेदनी शाह → देश निकाला।
  - → पराक्रमी राजा का डरपोक पुत्र
  - → 1662 में इसकी मृत्यु की खबर औरंगजेब ने द

*सुलेमान को पकड़ने जयसिंह गढ़वाल आया।

* मेदनी शाह व राम सिंह ने सुलेमान शिकोह को 1660 ई० में दिल्ली दरबार में पेश किया।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

48× फतेहपति शाह [1664–1716] उपनाम: गढ़वाल का अकबर / गढ़वाल का शिवाजी (दरबारी: मतिराम)

*मतिराम ने इनके काल को "गढ़वाल का स्वर्णकाल" कहा। *संरक्षिका: राजमाता कटौची

* गुरु गोविंद जी की भाँति "घोड़े पर बैठा चित्र" प्राप्त।

* कवि भूषण की पुस्तक: "फतह प्रकाश" [शील का सागर, हिंदुओं का रक्षक, उद्दण्डों को दंड देने वाला।]

* इसके दरबार में: नवरत्न *प्रसिद्ध चित्रकार: केहरदास, श्यामदास

65

* 1688:⇒ भैंगाणी का युद्ध [गुरु गोविंद सिंह से] (वर्णन: विचित्र नाटक)

* पुस्तक: मैमोयर्स ऑफ देहरादून (लेखक: R. C. विलियम्स) के अनुसार सहारनपुर पर आक्रमण किया तथा फतेहपुर नगर बसाया।

* गुरु रामराय: को देहरादून गुरुद्वारा बनाने में मदद। [3 गाँव दिये: खुड़बुड़ा, राजपुर, चामासारी]
इसके पौत्र प्रदीपशाह ने 4 गाँव दिये। [धामावाला/भूजनवाला/घाटवाला/पंडितवारी]

*इसके समय उद्योत चंद: बधाणगढ़ जीता तथा फतेहपति बैजनाथ जीता।

* प्रमुख ग्रंथ ⇒ * फतेहशाह [by रतन कवि/क्षेमराज] *फतेहशाह यशोवर्मन [by रामचन्द्र]
* वृत्त विचार [सुखदेव मिश्रा] *फतेह शाह कर्ण [जटाधर/जटाशंकर]

*49⇒ उपेंद्रशाह [1716] फतेहशाह का उत्तराधिकारी। *निधन: बग्वाल दीपावली के दिन।

UTTARAKHAND GYAN VIGYAN JEEVAN

50⇒ दिलीप शाह ⇒ (1716-1717) ⇒

51⇒ प्रदीप शाह [1717 - 1772] ⇒ पिता: दिलीपशाह, * माता/संरक्षिका ⇒ कनकदेई

* चंद वंशीय शासक: कल्याण चंद IV की रूहेलों से मदद की। [रूहेलों को 3 लाख रु दिये।] (1743)

* 1757 ⇒ गढ़वाल पर रोहिलों का हमला। (नजीब खाँ) [1757-70 तक कब्जा।]

* मंत्री/वजीर: चन्द्रमणि डंगवाल [श्रीनगर का मंगलेश्वर मंदिर बनाया।]

* दरबारी कवि: मेधाकर शर्मा [रचना: रामायण प्रदीप] * दीवान: रघुपति चौथा

* "मौलाराम तोमर" (चित्रकार) को संरक्षण। * ज्योतिष: जयदेव बहुगुणा

* राजधानी परिवर्तन: नवादा से "धामूवाला"

* इसका एक सिक्का: "लखनऊ संग्रहालय"

* 5 कठैत भाईयों की हत्या: पंचभैयाखाल (पौड़ी) में पुरिया नैथाणी ने की।

UTTARAKHAND ... GARHWAN

52* ललितशाह [1772 - 1780] → *इस समय कुमाऊँ का शासक: दीपचंद [सत्ता: मोहनचंद ने छीनी।]

*सिखों का दो बार आक्रमण। (1775, 1778) [देहरादून]

* 1779 → ललितशाह व सिखों का युद्ध।

* 1779 → हर्षदेव जोशी के आमंत्रण पर कुमाऊँ पर आक्रमण तथा बग्वाली पोखर युद्ध में मोहनचंद को हराया।

* ललितशाह ने प्रद्युम्नशाह को दीपचंद का दत्तक पुत्र बनाकर कुमाऊँ की गद्दी पर बैठाया।

* प्रद्युम्न शाह का प्रधानमंत्री: हर्षदेव जोशी * 1780 → ललितशाह की मलेरिया से दुलड़ी (हवलबाग) में मृत्यु।

* ललितशाह के 4 पुत्र: जयकृत शाह, प्रद्युम्नशाह, पराक्रम शाह, प्रीतमशाह

(प्रद्युम्नशाह, पराक्रम शाह — सगे)

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

53. ज़यकृत शाह [1780-1786] ⇒ समकालीन कुमाऊँ राजा: प्रद्युम्न चंद *माता: क्यूंठली रानी

*सिक्खों को राखी कर दिया। * मौलाराम को 60 गाँव दान दिये।

*1785 ⇒ कपरौली का युद्ध ⇒ जयकृत शाह + सिरमौर शासक जगत प्रकाश ने मिलकर प्रद्युम्न शाह + पराक्रम शाह को हराया।

*1785 ⇒ हर्षदेव जोशी का देवलगढ़, श्रीनगर पर हमला। [जोशीयाणी कांड]

* 1786 ⇒ रघुनाथ मंदिर में निधन।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

54 ⇒ प्रद्युम्न शाह ⇒ [1786 – 1804] गढ़वाल + कुमाऊँ दोनों जगह शासन। * (चरित्रहीन राजकुमार: पराक्रम शाह)

* माता ⇒ डोट्याली रानी * कुमाऊँ पर इसका प्रतिनिधि: हर्षदेव जोशी [कुमाऊँ मोहनचंद + लालसिंह जीते]

* 1790 ⇒ हर्षदेव जोशी के आमंत्रण पर गोरखाओं का अल्मोड़ा पर अधिकार।

* 1791 ⇒ गोरखाओं का गढ़वाल पर आक्रमण। (पराजित) [लँगूरगढ़ की संधि]

* 1795 (संवत 1851-52) भयंकर अकाल पड़ा। (इकावनी- बावनी)

* मौलाराम द्वारा रचित चित्र "दंपति का चित्र" प्रद्युम्न शाह से संबंधित है।

* 1803 ⇒ गढ़वाल में भयंकर भूकंप। [* गोरखा अमर सिंह थापा + हस्तीदल चौतरिया का आक्रमण]

* खुड़बुड़ा का युद्ध [14 मई 1804] ⇒ प्रद्युम्न शाह मारे गये। [प्रद्युम्न शाह के सहयोगी: गूजरराजा रामदयालसिंह

* गोरखाओं ने प्रद्युम्न शाह के पुत्र/भाई प्रीतमशाह को बंदी बनाया।

UTTARAKHAND GYAN WITH DEEWAN

गढ़वाल परमार वंश का प्रशासन .

प्रमुख अधिकारी

1. सबसे बड़े अधिकारी : राजा
2. टीका या कुमार: राजा के पुत्र
3. मुख्तार : सबसे बड़े अधिकारी
4. गोलदार : राजधानी के सुरक्षाधिकारी
5. फौजदार : परगने के सैनिक शासक।
6. चणु : संदेशवाहक
7. चोपदार : राजा के साथ चांदी का दंड लेकर चलने वाला।
8. थोकदार : परगने से राजस्व वसूली का कार्य।
9. दीवान : आय व्यय का कार्य।

परमार वंश की भू-व्यवस्था

- आय का प्रमुख स्रोत : भूमिकर या सिरती
- आसामी : कृषि भूमि के कृषक।
- आसामी 3 प्रकार के होते थे : खयकर, सिरतान, मौरूसिदार
- भूमि का मालिक : केवल राजा।
- केवल 3 परिस्तिथियों में राजा अन्य को भूमि का स्वामित्व देता था : संकल्प या विष्णुप्रीति, रौत, रूप में।
- थातवान या भूमिस्वामी : जिस व्यक्ति को रौत या जागीर दी जाती थी।
- खायकर : थातवान की भूमि पर बसे किसान।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- सिरतान : थातवान की भूमि पर अस्थाई रुप से बसे किसान।
- तिहाड़ : उपज का एक तिहाई कर।
- अधेल कर।
- पाथा का प्रचलन : अजयपाल।
- ## परमार वंश में प्रयुक्त महत्वपूर्ण शब्दावली ##
- **थात : भूमि**
- **थातवान : भूमिस्वामी**
- **थोकदार : राज्य और पधान के मध्य क् राजस्व अधिकारी।**
- **पधान : गाँव में राजस्व एकत्र करने का काम जिसे पटवारी को सौंपा जाता था।**
- **गुंठ या विष्णुप्रीति : मंदिरों को दान दी गयी भूमि।**
- **सदावर्त : इस दान का उपयोग धार्मिक कार्यों या तीर्थयात्रियों के भोजन की व्यवस्था के लिए।**
- **संजायत भूमि : सभी के अधिकार वाली भूमि।**
- **गूल : छोटी नहर।**
- **सिमार या गजार : कीचड़ वाली भूमि।**
- **खाल : वर्षा जल संरक्षण।**
- **घराट : आटा पीसने में प्रयुक्त।**
- **बेनाप भूमि : गाँव के स्वामित्व वाली भूमि।**
- **केसर ए हिन्द भूमि : बंजर भूमि।**

रमार वंश से संबंधित साहित्य:

- **गढ़वाल भूगोल: हरिदत्त शास्त्री**
- **गढ़वाल का इतिहास : हरिदत्त रतूड़ी**
- **फतेह प्रकाश : रत्न कवि**
- **रामायण प्रदीप : मेधाकर शर्मा**

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- वृत्त कौमुदी : मतिराम
- गढ़ राजवंश : मौलाराम
- प्रेम पथिक : तोताराम गैरोला
- फतेहशाह कर्ण : जटाधर मिश्र
- कीर्ति विलास : सदानंद डबराल
- मानोदय काव्य : भरत कवि
- गढ़वाल राजा वंशावली : कवि देवराज
- भारतीय लोक साहित्य : श्याम परमार
- गढ़वाल की दिवंगत विभूतियाँ : भक्त दर्शन
- दिगलोरी दैट वास गुर्जर : कन्हैय्या लाल
- गोरखनाथ एंड कनफटा योगिज : जॉर्ज फ्रेजर
- जय विजय नाटक : भवानी दत्त
- गढ़वीर महाकाव्य : रूपमोहन सकलानी
- नरेंद्र हिन्दू लॉ : हरिकृष्ण रतूड़ी

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWA

गोरखा आगमन संबंधी Diagram

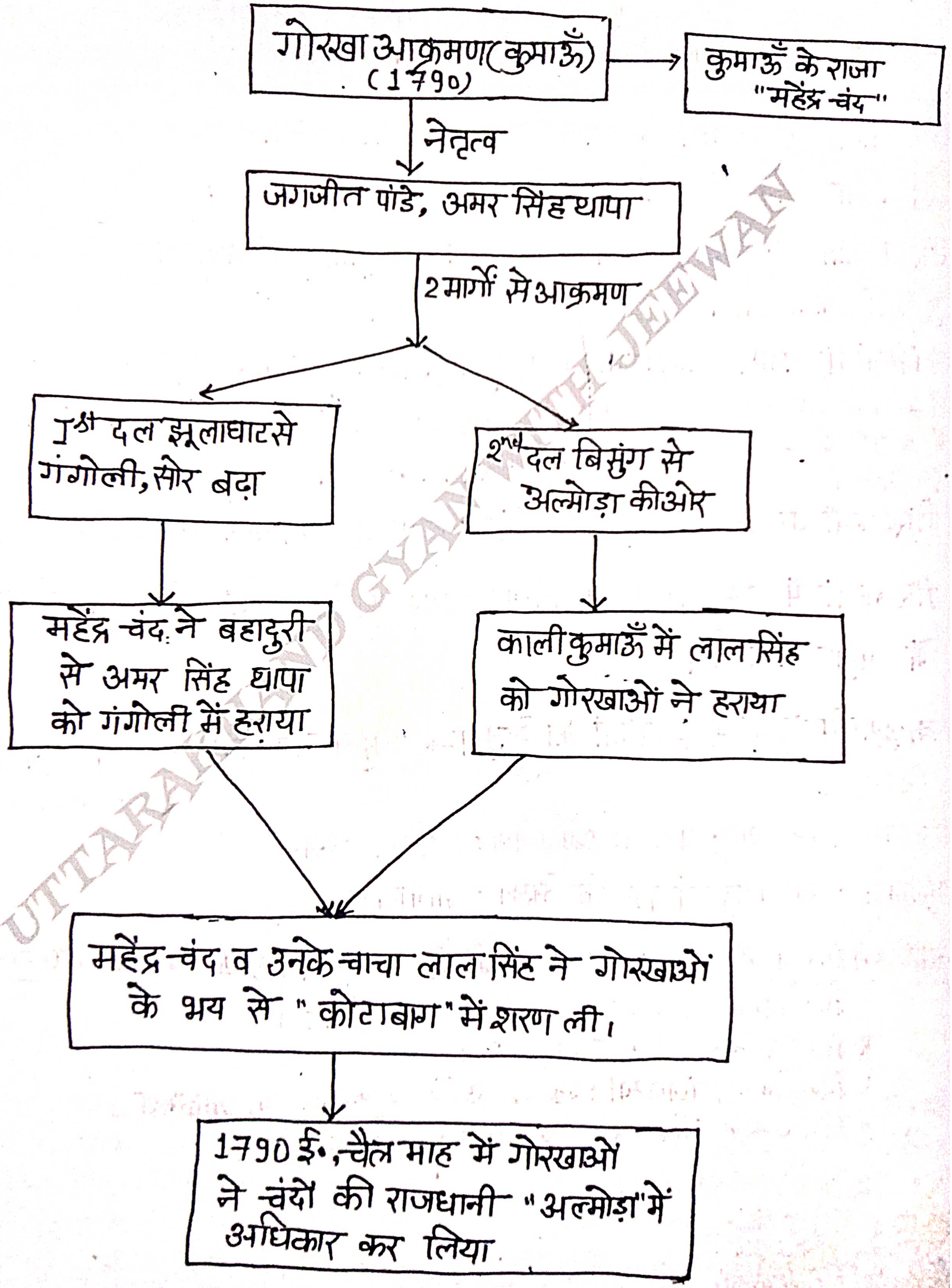

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

गोरखा आगमन : महत्वपूर्ण Facts

* गोरखाओं ने सर्वप्रथम आक्रमण कुमाऊँ पर 1790 में किया था।
* गोरखाओं को कुमाऊँ पर आक्रमण के लिए हर्षदेव जोशी ने आमंत्रित किया।
* गोरखाओं ने सर्वप्रथम कुमाऊँ के चंद राजाओं पर आक्रमण किया तथा गोरखा सेना का नेतृत्व चौतरिया बहादुरशाह, जगजीत पांडे, अमरसिंह थापा ने किया।
* गोरखा आक्रमण के समय नेपाल का राजा रण बहादुर शाह (1777 to 1804) था। जबकि कुमाऊँ का राजा महेंद्र चंद था। [*1804 के बाद राजा: विक्रम शाह]
* इस युद्ध के बाद राजा महेंद्र चंद तथा उसके चाचा लाल सिंह ने भागकर तराई में शरण ली तथा गोरखाओं का अल्मोड़ा पर अधिकार हो गया। (1790) [हवलबाग युद्ध]
* 1791 में गोरखाओं ने गढ़वाल पर आक्रमण किया लेकिन वे लंगूरगढ़ से आगे नहीं बढ़ पाये।
* 1792 ई॰ यह युद्ध संधि के साथ समाप्त हुआ जिसके तहत गढ़वाल के पंवार शासक प्रद्युम्नशाह ने नेपाल की अधीनता स्वीकार की।

74

* 1803 में गोरखाओं ने पुनः गढ़वाल पर आक्रमण किया तथा श्रीनगर को अपने अधीन कर लिया।
* 1804 ई॰ में गोरखाओं व गढ़वाल नरेश प्रद्युम्नशाह के मध्य खुड़बुड़ा का युद्ध हुआ (14 मई) जिसमें पवार राजा मारा गया व संपूर्ण गढ़वाल पर गोरखाओं का अधिकार हो गया। गोरखाओं की तरफ से अमरसिंह थापा, हस्तीदल चौतरिया लड़े।
* गोरखाओं ने कुमाऊँ पर 25 वर्ष (1790 से 1815), गढ़वाल पर 10 वर्ष (1804-14) तक अधिकार किया तथा इनके शासन को गोरख्याली कहा जाता है।

* [अमर सिंह थापा का पुत्र: रणजोर थापा]
  → उपाधि: दानवीर कर्ण [by मौलाराम]

Like Share Subscribe

* इनके समय में भूमिधरा, जंगल मालिकों से कर वसूला जाता था जबकि शिल्पकर्मियों से नहीं वसूला जाता था।

Imp
* गोरखा शिल्पकर्मियों से "कामी" कहते थे।

* जो व्यक्ति कर (Tax) चुकाने में असमर्थ होते थे, उन्हें रूहेलखंड (बरेली) के बाजार में बेच दिया जाता था।

* इन बाजारों में ब्राह्मण दासों को "कठुवा" कहा जाता था।
Imp

** गोरखाओं की न्याय प्रणाली ⇒

* गोरखाओं के समय अल्मोड़ा में एक न्यायालय था, जिसके न्यायाधीश को विचारी कहा जाता था।

* गोरखाओं के समय यदि किसी वाद विवाद के हल के लिए कोई चश्मदीद ना मिले तो व्यक्ति को "दिव्य" नाम की अग्निपरीक्षा से गुजरना पड़ता था। जो निम्नवत हैं → [3 प्रकार]

→ गोला दीप → तराजू का दीप
→ कढ़ाई दीप

Imp
* देहरादून के गुरु राम राय मंदिर के महंत (हरसेवक जी) को भी हत्या के आरोप में कढ़ाई दीप का सामना करना पड़ा। जिसमें महंत के हाथ जल गये।

* इतिहासकार अटकिंसन ने निम्नवत दीप बताये हैं →
(i) → तीर का दीप ⇒
(ii) → बौं काटि हारिया का दीप ⇒
(iii) → कालो हल्दो दीप ⇒
(iv) → घात का दीप ⇒

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

Like Share Subscribe ②

* गोरखाओं का प्रशासन ⇒

* गोरखाओं का शासक नेपाल में शासन करता था। कुमाऊँ, गढ़वाल में उनके राज्य का प्रमुख गवर्नर था। इस गवर्नर को सुब्बा या सूबेदार कहा जाता था।

* कुमाऊँ में गोरखा सूबेदार → जोगा मल्ल शाह (प्रथम), काजी नर शाही, चौतरिया बम शाह (अंतिम) [1806 से 1814]

* इनके समय में भूमिधरों, जंगल मालिकों से कर वसूला जाता था जबकि शिल्पकर्मियों से नहीं वसूला जाता था।

Imp
* गोरखा शिल्पकर्मियों से "कामी" कहते थे।

* जो व्यक्ति कर (Tax) चुकाने में असमर्थ होते थे, उन्हें रूहेलखंड (बरेली) के बाजार में बेच दिया जाता था।

* इन बाजारों में ब्राह्मण दासों को "कठुवा" कहा जाता था।
Imp

UTTARAKHAND GK WITH JEEWAN

** गोरखा सेना ⇒

Like Share Subscribe

* गोरखा सेना दो प्रकार की होती थी। तथा स्थायी सेना केवल 1 वर्ष के लिए होतीथ

(i) जागरिया ⇒ पहली बार सेना में शामिल सैनिक जागरिया कहलाते थे।(जागन्चा)

(ii) ढाकरिया ⇒ दूसरी या तीसरी बार पुन: सेना में शामिल सैनिक।(ढाकच्चा)

* गोरखा साम्राज्य पूर्व में मीची नदी से लेकर पश्चिम में कालीनदी तक विस्तृत था।

* गोरखाओं का प्रमुख हथियार खुकुरी था जिसका निर्माण नेवार जाति के लोहार करते थे।

Imp * 1815 में अंग्रेजों व गोरखाओं के मध्य कलुंगा (देहरादून) की लड़ाई में गोरखाओं ने असीम साहस दिखाया। अंग्रेजों ने इसकी याद में कलुंगा(देहरादून) में स्तंभ स्मृति की स्थापना की है। (गोरखाओं का नेतृत्व : बलभद्र सिंह थापा)

UTTARAKHAND GYAN WITH DEWAN

** गोरखाओं की कर प्रणाली ⇒

** गोरखाओं ने ब्राह्मणों पर "कुसही कर" लगाया था जो कि 260 नाली से अधिक जमीन रखने वाले ब्राह्मणों पर लगाया जाता था। (5 ₹ प्रति माह) or "13 ज्यूलिय

* पुंगाड़ी कर → यह भूमिकर था। (* मांगा कर ⇒ प्रत्येक नौजवान से [1 ₹]

* पगड़ी कर → जमीन जायदाद के हस्तांतरण पर लिया जाने वाला कर।

* सोन्या फागुन कर ⇒ उत्सवों का खर्च जिसमें भैंसे व बकरे लिये जाते थे।

* टान कर ⇒ इसे तान (कपड़ा कर) भी कहा जाता था।

* मिझारी कर ⇒ यह शिल्पकर्मियों, जागरिया ब्राह्मणों से लिया जाता था।

* सुवांगी दस्तूर ⇒ बीसी भूमि पर लिया जाने वाला 1 रुपया कर।

* मरो कर ⇒ पुत्रहीन व्यक्ति से लिया जाने वाला कर।

* रहता कर ⇒ ग्राम छोड़कर भागे लोगों पर यह कर लगता था।

Like Share Subscribe

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- टकराव के समय नेपाल का PM : भीमसेन थापा
- थापा ने अंग्रेजो से गोरखपुर में 200 गाँव छीन लिए।
- तात्कालिक कारण : बुटवल प्रान्त गोरखाओं ने कब्जाया। (1804)
- अप्रैल 1814 : हेस्टिंग्स ने अपना क्षेत्र वापस पाने को सेना को आदेश।
- अप्रैल 1814 : अंग्रेज बुटवल जीते।
- 29 मई 1814 : गोरखा पुनः बुटवल जीते। (अंग्रेज मारे।)
- नवंबर 1814 : गवर्नर जनरल हेस्टिंग्स ने युद्ध की घोषणा।

UTTARAKHAND GYAN WITH JE

- सेना को 4 भागों में बांटा गया।
- मेजर जनरल मार्ले : बिहार से काठमांडू आक्रमण।
- मेजर जनरल वुड : गोरखपुर पर हमले हेतु नियुक्त।
- मेजर जनरल गिलेस्पी : खलंगा किले से आक्रमण।
- मेजर जनरल ऑक्टरलोनी : सतलज व यमुना तट पर तैनात।
- **Important Events :**
- 1st हमला : खलंगा किले पर। (गोरखा नेतृत्व : बलभद्र सिंह थापा)
- गिलेस्पी ने 25 अक्टूबर, 26 अक्टूबर, 31 अक्टूबर को किले पर धावा बोला।
- बलभद्र की सेना ने अदम्य साहस दिखाया।
- गोरखाओं की वीरता को अंग्रेजों ने भी सराहा।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- खलंगा में 2 स्मारक इसके प्रमाण हैं।
- सुरगढ़ का किला भी जीते अंग्रेज। (प्रबल भक्ति थापा)
- 25 अप्रैल 1815 : अल्मोड़ा पर आक्रमण।
- 27 अप्रैल 1815 : गार्डनर व बम शाह के मध्य संधि।
- 15 मई : अंग्रेज मलाव का किला जीते।
- इसी दिन ऑक्टरलोनी और अमर सिंह थापा के मध्य संधि।
- शांति वार्ता : गजराज मिश्र , चंद्रशेखर उपाध्याय अंग्रेजों से मिले।
- संगोली संधि : गजराज और कर्नल ब्रेडशा के मध्य।
- इस समय नेपाल राजा : रणबहादुर शाह। (सन्धि अस्वीकार)

UTTARAKHAND GYAN WITH JE

- 10 फरवरी 1816 : नेपाल पर आक्रमण। (ऑक्टरलोनी)
- 4मार्च 1816 : नेपाल सरकार ने संधि स्वीकारी।

- **महत्वपूर्ण तथ्य**
- 30 नवम्बर 1815 खलंगा जीतते ही गढ़वाल अंग्रेजो के अधीन।
- अंग्रेजों ने गढ़वाल का उपजाऊ पश्चिमी भाग स्वयं लिया।
- शेष भाग : सुदर्शन शाह को दिया।
- 4 मार्च 1820 : संधि के अनुसार टिहरी सुदर्शन शाह के अधीन मानी गयी।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

महत्वपूर्ण घटनाक्रम

- 1815 : अलकनंदा ब्रिटिश और टिहरी गढ़वाल के मध्य विभाजक बनी।
- पूर्वी भाग : ब्रिटिश गढ़वाल, पश्चिमी भाग : टिहरी गढ़वाल
- ब्रिटिश गढ़वाल : कुमाऊं कमिश्नरी में शामिल
- संपूर्ण क्षेत्र : गैर विनियमित क्षेत्र में शामिल
- प्रशासन की आधारशिला : ट्रेल (R S टोलिया)

83

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

कुमाऊं कमिश्नर

1. एडवर्ड गार्डनर :

- कार्यकाल : 9 माह
- सहायक : ट्रेल
- काठमांडू कोर्ट में भेजा गया।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

2. ट्रेल (जुलाई 1817 से अक्टूबर 1835)

- कुमाऊँ 26 परगनों में बांटा।
- अस्सी साला बंदोबस्त। (1823)
- 1819 : पटवारी पद शरुवात। (राजस्व पुलिस)
- तिब्बत और भारत व्यापार को बढ़ावा।
- बद्रीनाथ केदारनाथ मार्ग निर्माण।
- डाक व्यवस्था सुचारू।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- 1816 : अल्मोड़ा जेल।
- 1821 : पौड़ी जेल।
- 1824 : सरकारी खजाना (डबल लॉक)
- 1829-30 : सस्पेंसन पुलों का निर्माण शुरू।
- 1833 : देसी चिकित्सक नियुक्ति। (अल्मोड़ा)
- 1835 : रिटायर।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

4: जॉर्ज टॉमस लुशिंगटन

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

◦नैनीताल नगरीकरण।
◦एक्ट X, 1842 : पारित। (नगरपालिका)
◦1845 : खैरना नैनीताल मार्ग।
◦1840 : बद्रीनाथ केदारनाथ मार्ग पर चिकित्सक।
◦1848 : बागेश्वर में गोमती नदी पर पुल।
◦अल्मोड़ा दवाखाना।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

5 : जॉन हेलिट बैटन

- 3rd कमिश्नर के सहायक।
- लुशिंगटन के साथ 12 वर्ष कार्य।
- नया राजस्व बंदोबस्त। [20 साला] (खसरा सर्वेक्षण)
- 1849 : पिथौरागढ़, लोहाघाट में दवाखाना ।
- अक्टूबर 1855 : कमिश्नरी नैनीताल लाये ।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

आज के Topic

हेनरी रैम्जे

ब्रिटिश कुमाऊँ में भू धारण अधिकार

उत्तराखंड की पारंपरिक न्याय व्यवस्था

जल प्रबंधन

89

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share

आज के Topic

हेनरी रैम्जे

ब्रिटिश कुमाऊँ में भू धारण अधिकार

उत्तराखंड की पारंपरिक न्याय व्यवस्था

जल प्रबंधन

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

6. कमिश्नर ट्रेल (1856 – 1884)

- कमिश्नर : 28 साल
- प्रशासन : 44 साल
- कुष्ठ रोगियों हेतु विशेष काम। (गणेश का गैर : 1848)
- 1854 : कुष्ठ आश्रम और चिकित्सालय।
- तराई में नहर।(219.6 km)
- 1883 : तराई इम्प्रूवमेंट फण्ड।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- 1857 : नैनीताल स्कूली शिक्षा केन्द्र।
- 1867 : शेरवुड ।
- 1869 : ऑल सेंट कॉलेज।
- 1877 : स्टानले स्कूल। (बिड़ला स्कूल)
- 1878 : सेंट मेरीज कान्वेंट।
- 1884 : वेलेज़ली हाई स्कूल।
- 1857 की क्रांति बेअसर ।
- क्रांति के समय रुहेलखंड के कमिश्नर एलेक्जेंडर को शरण।

णवीर सेना गठन। (गोरखा)

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- 1858 : 1st मेथोडिस्ट चर्च। (विलियम बटलर)
- आपदा प्रबंधन पर विशेष ध्यान।
- 1867 : हिल साइड सेफ्टी कमेटी।
- 1880 : नैनीताल भूस्खलन।(79 km निकास नाली।)
- कुमाऊँ का बेताज बादशाह।
- नैनीताल कमिश्नरी का विकास।(लाये : बैटन)
- बैटन का 20 साला बंदोबस्त 1860 लागू। (प्रभावी रूप से चलाया।)
- वन संरक्षण पर काम।
- वन विभाग के कंजवेटर।
- ...दारी प्रथा समाप्त, वनों की मार्किंग।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

ब्रिटिश कुमांऊँ में भू धारण अधिकार

- थात : भूमि।
- थातवान : भूमि का स्वामी।
- खायकर : थातवान का कृषक।
- सिरतान : कृषक।(किराया थातवान को।)
- सिरतान : कारीगर, हालिया, सेवक कृषि का काम।
- गूंठ : मंदिर के अधीन जमीन से प्राप्त राजस्व बद्रीनाथ, केदारनाथ ...र के लिए प्रयुक्त।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- सदावर्त : धन/निधि तीर्थ यात्रियों हेतु प्रयुक्त।
- ट्रेल ने सदावर्त संबंधित अनुदान का प्रयोग दवाखाना बनाने आदि में प्रयुक्त
- हलिया : भू स्वामी के कृषक।(आवास, भोजन व्यवस्था : भू स्वामी)
- साझी : कृषक , समझौते के तहत काम करता था।
- संजायत भूमि : सम्पूर्ण गाँव के स्वामित्व वाली भूमि।
- शिकमी हिस्सेदार : संयुक्त हिस्सेदार। (भाई या भतीजे के साथ)
- पधान : गाँव से राजस्व जमा करके पटवारी को सौंपता था।
- पधान खंगी/चारी/हक पधानी : पधान को अपने काम के बदले दी गयी जमीन।
- थोकदार : राज्य व पधानों के मध्य का राजस्व अधिकारी।
- पधान इसके अधीन कार्य करता था।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- थोकदार में अन्य नाम : कमीन या सयाना।
- बेनाप भूमि या बंजर भूमि : 17 अक्टूबर 1893 को सरकार ने बेनाप भूमि को सरकारी संपत्ति घोषित किया तथा वनों को जिला संरक्षित वन घोषित किया।
- केसर ए हिन्द भूमि : ई के पौ ने गढ़वाल में बंजर भूमि को गाँव के रिकॉर्ड से हटाकर सरकारी रिकॉर्ड में दर्ज कर दी तथा स्वामित्व राज्य(केसरे हिन्द) को प्राप्त हो गया।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

दैवीय न्याय

- ## भगवान गोलू
- न्याय के देवता
- भगवान भैरव के अवतार।
- लोकगाथाओं के अनुसार : चंद वंश अधीन राय वंश के राजकुमार।
- झालराय > हालराय> गोलू देव (15वीं शताब्दी)
- हालराय की 8^{th} पत्नी से उत्पन्न पुत्र।
- नेपाल के साथ युद्ध में शहीद।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

गंगनाथ देवता

- वंचितों के देवता रुप में पूजित।
- डोटी राज्य के राजा उदयचंद्र के पुत्र।
- ज्योतिषी > 12 वर्ष गृह त्याग > 7 बार विवाह > भाना ब्राह्मणी से प्रेम।
- भाना के परिवार ने हत्या कर दी। (भूत बनकर अवतरित।)
- गंगनाथ जी पशुबलि पसंद नहीं ।
- जागरों के माध्यम से आज भी जगाया जाता है।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

जल प्रबंधन

- गूल : पहाड़ों में सिंचाई, पेयजल आदि के लिए प्रयुक्त।
- नौला: भूमिगत जल एकत्र करने हेतु निर्मित। (एक हतिया नौला, जाह्नवी नौला)
- सिमार या गजार : कीचड़ युक्त भूमि।
- चुपटौला : प्राकृतिक जल छिद्र , जल एकत्रित।
- खाल : वर्षा जल संग्रहण हेतु उपयुक्त।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

कुमाऊँ जल नियम

- 1917
- सभी जल संसाधन राज्य के अधीन।
- एंग्लो सेक्शन लीगल सिस्टम : पारंपरिक रिवाज कानून के अधीन।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

कुमाऊँ वाटर रूल्स : 1930

- 1917 के नियम का सुधार।
- पनचक्कियों हेतु नए नियम।
- पनचक्की शुल्क : 3 rs प्रति वर्ष किया गया।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

उत्तराखंड में उद्यान विकास

UTTARAKHAND
GYAN WITH
JEEWAN

- तालेश्वर ताम्र पत्र में वटक शब्द का प्रयोग।
- भारत में सेब की खेती : यूरोपियों की देन।
- उत्तराखंड में सेब उत्पादन 1860 के दशक इन चौबटिया में शुरू।
- प्रमुख केंद्र : रामगढ़, मुक्तेश्वर, जालना, हर्षिल।
- एटकिंसन ने अपनी पुस्तक हिमालयन गजेटियर में यहाँ उगाई जाने वाली फसलों के बारे में बताया है।
- आलू की खेती :: रैम्जे के समय में।
- 1823 : उत्तराखंड में देहरादून में आलू की खेती सर्वोरथं मेजर यंग ने शुरू की।
- सर्वप्रथम विदेशी आलू की खेती नैनीताल में श्रीमती हैरी बर्जर ने की।
- 1909 : आलू का अत्यधिक विकास होने के कारण सरकार ने ज्युलिकोट में कुमाऊँ गवर्नमेंट गार्डन की स्थापना 1909 में की।

Subscribe
like & share

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- इसका कार्यभार : नार्मन गिल
- नैनीताल के आलू को मशहूर बनाने में गिल का योगदान सराहनीय।
- फल उद्योग में वृद्धि के कारण चाय के बागान लगभग समाप्त। (प्रमुख चाय बागान :: भीमताल, रामगढ़, भवाली या न्यूटन का बागान, मुलियन का बागान भवाली में, घोड़ाखाल बागान)
- घोड़ाखाल में फल उद्यान : व्हीलर,
- रामगढ़ में फर्क उद्यान : P E डेरियाज़ ने लगवाए।
- हर्षिल में फेड्रिक विल्सन ने विदेशी आलू, सेब लगवाये।(विल्सन सेब)
- 1868: चौबटिया में सरकारी उद्यान ।
- इस उद्यान म 1st सुपरिटेंडेंट : W क्रा ।
- चौबटिया में सेब की प्रजाति रेड डिलीशियस : स्टॉक ने उगाया।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- केसर की खेती : हॉलैंड से मंगवाकर ज्युलिकोट, नैनीताल में केसर लगाया गया। (नैनीताल व अल्मोड़ा में अच्छी फसल।
- आलू की प्रजाति "लॉग कीपर" को कुमाऊँ लाने का श्रेय : नार्मन गिल

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

Subscribe
like & share

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

नॉर्मन गिल : प्रमुख योगदान

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

Subscribe
like & share

- क्यू गार्डन लंदन में प्रशिक्षित वनस्पति शास्त्री।
- 1900 : बोटनिकल गार्डन कलकत्ता में सहायक।
- 22 मार्च 1909 : कुमाऊँ गवर्नमेंट गार्डन का कार्यभार मिला।
- खुर्पाताल : आलू की खेती शुरू।
- कुमाऊँ की समस्त जंगली पौधों की जानकारी हेतु हरबेरियम बनाया। (फ़्लोरा ऑफ कुमाऊँ)
- सहायक : राम लाल शाह (Trained by : नार्मन गिल)
- 1932 : राजकीय उद्यान चौबटिया में " हिल फ्रूट रिसर्च स्टेशन" स्थापित।
- 1943 : भवाली में इम्पीरियल पोटेटो रिसर्च स्टेशन स्थापित।
- 1936 : बोसी सेन ने अल्मोड़ा में " विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की स्थापना। (पर्वतीय सब्जी विकास हेतु।)

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

उत्तराखंड में चाय की खेती

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

Subscribe
like & share

- 1824 : लेखक बिशप हेबर ने जंगली रूप में चाय उगने की बात की।(कुमाऊँ में।)
- 1827 : सहारनपुर के dr रॉयल ने चाय विकास हेतु EIC को तथा 1831 में विलियम बेंटिक GG को पत्र लिखा।
- 1834 : बेंटिक ने चाय कमेटी बनाई।
- 1835 : कलकत्ता से आये चाय के पौधे अल्मोड़ा के लक्षेस्वर व भीमताल में नर्सरी लगाई लगी।
- 1835 : टिहरी गढ़वाल में भी चाय खेती शुरू।
- अल्मोड़ा के लक्ष्मेश्वर में फॉल्कनर ने बगीचा लगाया।
- 1838 : फार्च्यून नामक अंग्रेज को चाय की जानकारी हेतु चीन भेजा गया।
- 1842 : 10 चाय के विशेषज्ञ चीन बुलाये गए।
- यहां की चाय चीन की चाय उलंग के समान पाई गई।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- 1841 : हवालबाग में मेजर कार्बेट ने बगीचा लगाया।
- इसे पहले सरकार फिर लाला अमरनाथ ने खरीदा।
- 1850 : राम जी साहब ने कत्यूर में बगीचा लगाया।
- इस बगीचे को नॉर्मन ट्रूप ने खरीदा।
- 1844 : कुलागिर देहरादून में सरकारी बागान की शुरुवात।
- 1867 में इस बागान को सिरमौर के राजा को 20000 पौंड में बेचा गया
- 1843 : कैप्टन हडलस्टोन ने पौड़ी, गाडोलिया में चाय बागान2 लगाए।
- 1850 : EIC के आमंत्रण पर चीनी चाय विशेषज्ञ असाई वॉन्गं गढ़वाल आया।
- 1930 तक अल्मोड़ा में सर्वाधिक चाय मल्ला कत्यूर , कौसानी थे।
- गडोली पौड़ी में सरकारी चाय फैक्ट्री : D A चौफिन ने की।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

टिहरी रियासत के शासकों का क्रम

- S सुदर्शन शाह
- B भवानी शाह
- P प्रताप शाह
- K कीर्ति शाह
- N नरेन्द्र शाह
- M मानवेन्द्र शाह

Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

1. सुदर्शन शाह

Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- कार्यकाल : 1815 से 1859
- अंग्रेजों ने 7 लाख rs ने चुका पाने के कारण श्रीनगर छीना।
- 28 dec 1815 : टिहरी में राजधानी बनाई।
- इस दिवस को रेस्टोरेशन डे कहा जाता है।
- खुदबुड़ा के युद्ध 1804 के बाद ये कनखल, ज्वालापुर आदि जगहों में रहे।
- बरेली में कैप्टन हियरसी से मुलाकात।
- 1817 : गोरखाओं द्वारा पकड़े गए प्रीतम शाह की गढ़वाल वापसी हुई।
- 1820 : ब्रिटेन यात्री मुरक्राफ्ट गढ़वाल आया।
- मुरक्राफ्ट ने इसे " कलाविदों में शिरोमणि" कहा।
- सुदर्शन शाह स्वयं को " सूरत कवि" कहता था।
- 4 मार्च 1820 : अंग्रेजों ने टिहरी में सुदर्शन की सत्ता को मंजूरी दी।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

सुदर्शन शाह : महत्वपूर्ण कार्य

- स्वरचित ग्रंथ : सभासार (भाषा : ब्रज)
- इस पुस्तक के 7 खंड हैं जिसमें से 3 खंड शूरवीर सिंह के पास, 3 खंड राजकीय पुस्तकालय टिहरी और एक भाग जीवानंद श्रीयाल के पास है।
- फ्रैंडन नामक अंग्रेज को बाघ से बचाया।
- 1823 : टिहरी का पहला भूमि बंदोबस्त किया।
- 1824 : रवाईं परगना टिहरी में शामिल।
- 1848 : राजभवन बनवाया। (पुराना दरबार)
- चेतु और मानकु नामक कलाकारों को आश्रय दिया।
- अन्य नाम : बोलन्दा बद्रीश (आम जनता)

Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

भवानी शाह

- इससे पहले इसका भाई : शेरशाह कुछ समय का शासक।
- इसे अंग्रेजों ने राजा बनाया। (रैम्जे की मदद।)
- कार्यकाल : 1859 से 1871
- माता : गुणदेवी
- 1862 : संस्कृत पाठशाला बनवाई। (देवप्रयाग)

Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

प्रताप शाह

- कार्यकाल : 1871- 1886
- 1877 : प्रतापनगर की नींव।
- टिहरी में अंग्रेजी शिक्षा की नींव।
- टिहरी में प्रताप प्रिंटिंग प्रेस खोली ।
- सर्वप्रथम टिहरी में पुलिस विभाग।
- 1873 : ज्युला पैमाइश भूमि बंदोबस्त करवाया।
- अपने राज्य को 22 पट्टियों में बांटा। (कारदार की नियुक्ति।)
- कारदार या पटवारी।
- टिहरी - मसूरी - श्रीनगर राजमार्ग निर्माण।
- 1883 : एंग्लो वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल स्थापना।
- टिहरी में न्यायालय भवन निर्माण। (चीफ कोर्ट)
- 1882 : लक्ष्मू कठैत ने ढाँढक आंदोलन किया।

Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- लक्षमू : रवाईं परगने का प्रशासक।
- यह पाला बिसाऊ टैक्स प्रथा के विरुद्ध राजा के खिलाफ था।
- इनके 3 पुत्र : कीर्तिशाह, विचित्रशाह, सुरेंद्र शाह।

Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

महारानी गुलेरिया :

- मूल नाम : कुंदन देइ
- प्रतापशाह की पत्नी।
- ये कीर्तिशाह की संरक्षिका थीं।
- इन्होंने कौंसिल ऑफ रिजेंसी की मदद से राजपाठ चलाया।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

4. कीर्ति शाह

- संरक्षिका : महारानी गुलेरिया।
- कार्यकाल : 1886 से 1913
- शिक्षा : मेयो कॉलेज (अजमेर)
- 27 मई 1898 : सत्ता प्राप्त हुई।
- 1898: ब्रिटिश सरकार ने कीर्ति शाह को " कम्पैनियन ऑफ इंडिया" की उपाधि दी।
- 1900 : इंग्लैंड आगमन पर 11 तोपों की सलामी।
- 1901 : नाईट कमांडर की उपाधि।
- कानूनी सलाहकार : तारादत्त गैरोला ।
- 1902 : स्वामी रामतीर्थ टिहरी आये।
- कीर्ति शाह ने स्वामी जी को विश्व धर्म सम्मेलन जापान में भेजा।
- 1903 : दिल्ली दरबार में इन्हें सर या KCSI की उपाधि दी गयी।
- उपाधि : गढ़वाल का अकबर

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

कीर्ति शाह : प्रमुख कार्य

- प्रताप हाई स्कूल को उच्चीकृत किया।
- 1909 : हीवेट संस्कृत पाठशाला स्थापना।
- टिहरी में नगरपालिका, वेधशाला, प्रेस की स्थापना।
- टिहरी में पहली बार बिजली आगमन।
- कुष्ठ आश्रम : उत्तरकाशी ।
- कृषि बैंक : बैंक ऑफ गढ़वाल स्थापना।
- आविष्कार : हिंदी टाइपराइटर।
- 1897 : टिहरी घंटाघर निर्माण। (110mt.)
- 1894 : कीर्तिनगर स्थापना।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share

5. नरेंद्र शाह

- संरक्षिका : राजमाता नेपालिया।
- कार्यकाल : 1913 - 1946
- अल्पायु होने के कारण : संरक्षक समिति बनी। (सदस्य : शोमियर, हरिकृष्ण रतूड़ी।)
- विवाह : हिमांचल के क्यूंथल रियासत की सगी बहनों कमलेंदुमती, इंदुमती से हुआ।
- अक्टूबर 1919 : राजगद्दी प्राप्त हुई।
- 1921 : नरेंद्रनगर स्थापना। (1925 में राजधानी।)
- अंग्रेजों ने CIE उपाधि 1921, सर या KCSI उपाधि 1931 में दी।
- 30 मई 1930 : रवाईं या तिलाड़ी कांड।
- 23 जनवरी 1939 : टिहरी प्रजामंडल स्थापना।
- 25 जुलाई 1944 : श्रीदेव सुमन जी का निधन।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
UTTARAKHAND
GYAN WITH
JEEWAN
Subscribe
like & share

नरेंद्र शाह के कार्य ::

- भूमि बंदोबस्त : डोरी पैमाइश पर।
- नरेंद्र हिंदू लॉ लागू। (लेखक : हरिकृष्ण रतूड़ी, 1918 : प्रकाशित।)
- गढ़वाल का शेरशाह सूरी।
- 1920 : बेगार प्रथा समाप्त, कृषि बैंक स्थापना।
- 1921 : टिहरी में पहली बार जनगणना।
- 1923 : सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापना।
- प्रताप हाई स्कूल को इंटर कॉलेज बनाया।
- 1933 : BHU में कीर्तिशाह कई याद में 1 लाख रुपये दान किये।
- 1937 : BHU ने LLD की उपाधि दी।
- 1938 : टिहरी हाइकोर्ट स्थापना। (नरेंद्रनगर)
- इसके पहले मुख्य न्यायाधीश : मुकुन्दी लाल (1938 से 1943)
- 1934 : रेड क्रॉस सोसाइटी।
- 1939 : कुष्ठ विधान पारित।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share

6. मानवेन्द्र शाह

- अक्टूबर 1946 : राज गद्दी प्राप्त हुई।
- टिहरी रियासत के अंतिम शासक। (परमार वंश के 60वें या अंतिम।)
- अगस्त 1946 : प्रजामंडल को मान्यता।
- 15 अगस्त 1947 : प्रजामंडल के अध्यक्ष परिपूर्णानंद पैन्यूली।
- 1947 : सकलाना विद्रोह।
- 1948 : कीर्तिनगर विद्रोह। (भोलूराम, नागेंद्र सकलानी शहीद।)
- 1948 : प्रजामंडल और राजा के मध्य बैठक में संविधान बनाने लर सहमति।
- संविधान सभा के अध्यक्ष : पुरुषोत्तम दत्त रतूड़ी। (49 बैठक।)
- अंतरिम मंत्रिमंडल : 15 फरवरी 1948 को शपथ व मुख्यमंत्री ज्योतिप्रसाद बने।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share

- 1 अगस्त 1949 : टिहरी का भारत में विलय। (संयुक्त प्रान्त के 50 वां जिला।
- विलयपत्र पर परिपूर्णानंद पैन्यूली ने हस्ताक्षर किए।
- 1957 से 2004 तक : मानवेन्द्र शाह सांसद।
- 1977: मानवेन्द्र शाह को चुनाव में परिपूर्णानंद पैन्यूली ने हराया।
- 5 जनवरी 2007 : मानवेन्द्र शाह निधन।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

Subscribe
like & share

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

सामान्य जानकारी : प्रारंभिक प्रबंधन

- 1839 : गढ़वाल एक स्वतंत्र जिला बना।
- जिम्मेदारी : सहायक कमिश्नर।
- जिले को 11 परगनों और 86 पट्टियों में बांटा गया।
- जिले की राजस्व वसूली की जिम्मेदारी : सहायक कमिश्नर।
- इसके सहयोगी : डिप्टी कलेक्ट, तहसीलदार, कानूनगो, पटवारी।
- कानूनगो का पद वंशानुगत।
- 1819 : राजस्व वसूली में सबसे अंत में पटवारी आता था। इस पद की शुरुवात ट्रेल ने की।
- इनके अलावा : पधान और थोकदार भी नियुक्त।
- पधान : वंशानुगत। (नाबालिक : मुख्तार)
- सयाना/कमीन/थोकदार : पधान और सरकार के मध्य लगान वसूलने वाला अधिकारी।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

UTTARAKHAND
GYAN WITH
JEEWAN
Subscribe
like & share

ब्रिटिश प्रबंधन का इतिहास

- 1815 : कुमाऊँ में भूमि बंदोबस्त गार्डनर ने किया।
- 1816 : गढ़वाल का पहला बंदोबस्त : ट्रेल ने करवाया।
- 1817 : कुमाऊं और गढ़वाल का दूसरा बंदोबस्त : ट्रेल ने।
- 1818 : कुमाऊं और गढ़वाल का तीसरा बंदोबस्त : ट्रेल ने करवाया।
- 1820 : कुमाऊं और गढ़वाल का चौथा बंदोबस्त : ट्रेल ने।
- 1823 : कुमाऊं और गढ़वाल का पांचवां बंदोबस्त : ट्रेल ने करवाया।
- इस बंदोबस्त को पंचशाला बंदोबस्त या अस्सी साला बंदोबस्त भी कहते हैं।
- 1828 : कुमाऊं और गढ़वाल का छठा बंदोबस्त : ट्रेल ने करवाया।
- 1833 : कुमाऊं और गढ़वाल का सातवां बंदोबस्त : ट्रेल।
- 1840 : गढ़वाल का आठवां बंदोबस्त : बैटन।
- 1844 : कुमाऊं का आठवां बंदोबस्त : बैटन।
- 1863 : कुमाऊं और गढ़वाल का नवाँ बंदोबस्त : विकेट या बैकेट ने करवाया।
- 1893 : गढ़वाल का दशवा बंदोबस्त : पौ ने करवाया।
- 1899 : कुमाऊं का दशवा बंदोबस्त : गूँज ने करवाया।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

महत्वपूर्ण तथ्य--

- UK में सर्वप्रथम भूमि बंदोबस्त : चंद राजा रतन चंद ने करवाया।
- गोरखाओं क् प्रथान बंदोबस्त : सुब्बा जोगमल ने 1791- 92 में।
- गोरखाओं क् अंतिम भूमि बंदोबस्त : कुमाऊं(1807) गढ़वाल (1812)
- अंग्रेजों का पहली बार वैज्ञानिक विधि से किया गया बंदोबस्त : बैकेट (1863 – 73)
- बैटन के बंदोबस्त : 1840 (8TH) को बीस साला बन्दोबत कहा जाता है।
- बैकेट के बंदोबस्त को सन 80 का बंदोबस्त भी कहा जाता है।
- टिहरी रियासत का 1ST बंदोबस्त : सुदर्शन शाह (1823)
- बैकेट ने भूमि बंदोबस्त की डोरी पैमाइस प्रथा अपनाई।
- इस प्रथा के माध्यम से हर खेत क् क्षेत्रफल निकालना आसान हुआ।
- बैकेट ने पर्वतीय भूमि को 5 भागों में बांटा।
- तलाऊँ, उपराओं अव्वल, उपराओं दोयम, इजरान, कँटील।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share

ब्रिटिश गढ़वाल का वन प्रबंधन::

- वन प्रबंधन का 1ST प्रयास : 1823 में ट्रेल ने किया।
- 1869 : कुमाऊं वन प्रबंधन की जिम्मेदारी : मेजर पियरसन को दी गयी।
- 1869 : गढ़वाल वन विभाग की स्थापना।
- इसी क्रम में गढ़वाल के वनों को 4 भागों में बांटा गया।
- चंडी के वन
- उदयपुर के वन
- कोटी दून के वन
- पाटली दून के वन
- 1893 : निरर्थक भूमि या WASTE LAND को वन भूमि।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

न्याय व्यवस्था

- ब्रिटिश गढ़वाल और कुमाऊँ कमिश्नरी में न्याय करने वाला सर्वोच्च अधिकारी : कुमाऊँ कमिश्नर् था।
- इसके बाद : असिस्टेंट कमिश्नर, जूनियर असिस्टेंट कमिश्नर आदि होते थे।
- कमिश्नर यआ असिस्टेंट कमिश्नर अपने डिवीसन में न्याय के लिए कहीं भी कोर्ट लगा सकते थे।

Subscribe
like & share

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- विवाह :: विवाहिता असल (समान जाती में विवाह।)
- विवाह पद्धति :: कन्यादान, टका का विवाह।
- कुम्भ विवाह, प्रतिमा विवाह, अर्क विवाह, पानी विवाह में वर अनुपस्थित रहता।
- सामान्य प्रबंधन ::मालगुजारी वाले अधिकारी ही पुलिस का काम करते थे।
- (तहसीलदार, थोकदार, कानूनगो)
- कानूनगो : इंस्पेक्टर, पटवारी : सब इंस्पेक्टर
- 3 पुलिस स्टेशन : श्रीनगर, कोटद्वार, लैंसडौन
- 1816 : अल्मोड़ा, 1850 : पौड़ी जेल।
- शिक्षा हेतु कार्य :: 1840 – श्रीनगर में एलिमेंट्री वर्नाक्यूलर स्कूल
- 1854 : शिक्षा विभाग ।
- 1865 में अपिस्कोपल मेथोडिस्ट अमेरिकन मिशन ने पौड़ी में चोपड़ा हाई स्कूल बनवाया।
- 1896 : गुडोली में प्राइमरी स्कूल निर्माण।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- रोग निवारण :: 1901 – श्रीनगर में कोढ़ीखाना निर्माण किया गया और इसका प्रबंधन टिहरी रियासत को सौंपा गया।
- 1907 : तीर्थयात्रियों के लिए श्रीनगर, उखीमठ, बद्रीनाथ, चमोली आदि जगहों में अस्पताल बनवाये गए।
- आय के साधन : नकद कर और चाय फैक्ट्री।
- अत्यधिक गेहूँ और चावल उत्पादन। (निर्यात : तिब्बत, बिजनौर।)

Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

•गढ़वाल में राजनैतिक मतभेद के कारण

- असफल वन नीति।
- कुली बेगार प्रथा : निशुल्क कार्य।
- कुली उतार : सामान धोना।
- कुली बर्दायस : निशुल्क भोजन।
- (कुली बर्दायस का उल्लंघन करने में कारण रैम्जे ने सोमेश्वर में आम जनता पर 500 रुपये का अर्थ दंड लगवाया।)
- गढ़वाल में इस प्रथा के विरोध में जो समिति बनी उसकी अध्यक्षता : बैरिस्टर मुकुन्दीलाल जी ने की।
- 1879 : भास्कर जोशी और रास बिहारी घोष जी ने गुट संगठन बनाया।
- 1903 : अल्मोड़ा में युथ क्लब स्थापना।
- 1912 : कांग्रेस की शाखा कुमाऊं कमिश्नर में।
- 1916 : कुमाऊँ परिषद की स्थापना।
- चंद्रशेखर आजाद जी ने गढ़वाल में रिवाल्वर चलाने का प्रशिक्षण लिया।

Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- 1870 : बुद्धिवल्लब पंत जी ने अल्मोड़ा में डिबेटिंग क्लब स्थापित किया।
- 1913 : स्वामी सत्यदेव जी ने अल्मोड़ा में शुद्ध साहित्य समिति स्थापित की।
- 1914 : काशीपुर में प्रेम सभा की स्थापना।
- 1935 : टिहरी में बाल सभा।
- 1939 : टिहरी में राज्य प्रजा मंडल स्थापना। (देहरादून।)
- राजनीतिक चेतना के लिए बहुत से समाचार पत्रों ने भी अहम भूमिका निभाई। (अल्मोड़ा अखबार, शक्ति, स्वाधीन प्रजा, गढ़वाली, कर्मभूमि , जागृत जनता, गढ़वाल समाचार आदि।)
- श्रीदेव सुमन जी का अतुलनीय योगदान।
- 2 विक्टोरिया क्रॉस विजेता।
- 23 अप्रैल 1930 : पेशावर कांड नायक गढ़वाली जी।
- 1942 : रॉयल गढ़वाल राइफल्स की 2 टुकड़ियां 2/18 और 6/18 आजाद हिंद फौज में शामिल।
- 2500 से अधिक सैनिकों ने अपना योगदान दिया।
- लेफ्टिनेंट कर्नल चंद्रसिंह नयेगा : सिंगापुर में ऑफिसर्स ट्रेनिंग स्कूल के कमांडर।
- मेजर देवसिंह दानू : नेताजी के व्यक्ति गत गार्ड्स के कमांडर।
- लेफ्टिनेंट कर्नल बुद्धि सिंह रावत : नेताजी के पर्सनल अडजुटेंट थे।
- कमांडर रतूड़ी जी को नेताजी ने ""सरदार ए जंग" की उपाधि दी।

Subscribe
like & share
UTTARA
GYAN
JEE
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

ब्रिटिश गढ़वाल में राजनैतिक आंदोलन

- 1857 की क्रांति : बेअसर
- 1919 : मुकुन्दीलाल जी और अनुसूया प्रसाद बहुगुणा ने INC के अमृतसर अधिवेशन में भाग लेकर रोलेट एक्ट के विरोध जताया।
- कुली बेगार प्रथाओं का उन्होंने खुलकर विरोध किया।
- इसके कारण दो पधानों ईश्वरी दत्त ध्यानी और मंगतराम ने अपना पद छोड़ा।
- गजेरा गाँव (पौड़ी) के केसर सिंह ने SDM के रीडर पद को छोड़ा।
- जोध सिंह नेगी : कुली एजेंसी बनाई।
- श्रीनगर सम्मेलन 1938 – अध्यक्ष प्रताप सिंह
- इस सम्मेलन में नेहरू जी और विजय लक्ष्मी पंडित भी मौजूद।
- सुमंज ने गढ़वाल के एकीकरण पर जोर दिया।
- गढ़वाल जागृत सभा :: अध्यक्ष प्रताप सिंह , सचिव उमानंद बर्थवाल ।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- तराई : नदियों द्वारा बहाकर लाए गए महीन बालू और मिट्टी से निर्मित स्थल ।
- भाभर :: नदियों द्वारा कंकड़ पत्थर से निर्मित स्थल।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग काशीपुर को अपनी पुस्तक में गोविषान कहते हैं।
- दिल्ली सल्तनत के बहुत से शासकों ने इस क्षेत्र पर आक्रमण किया। (बलबन, नसीरुद्दीन शाह, फिरोजशाह आदि।)
- मुगल काल में आईने अकबरी पुस्तक के अनुसार तराई क्षेत्र में 21 महल थे।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- अकबर ने तत्कालीन चंद राजा रुद्रचंद को नागौर की लड़ाई में भेजा।
- इसकी वीरता से प्रसन्न होकर अकबर ने चौरासी माल (नौलखिया माल) क्षेत्र दिया।
- तराई वाले क्षेत्र में 7 परगने थे जो की निम्नवत हैं :
- सहजगीर (जसपुर) , कोटा (काशीपुर), मुंडिया (बाजपुर), बक्शी (नानकमत्ता), बुक्साढ़ (रुद्रपुर) , चिंकी (बहेड़ी व सुबड़ना) गदरपुर ।
- चंद शासक त्रिमलचंद के समय तराई से 9 लाख रुपए की कमाई होती थी।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

- बाजबहादुर चंद ने नवाब रुस्तम खान की मदद से तराई से विद्रोहियों को खदेड़ा।
- चंद वंश के शासक दीप चंद ने काशीपुर और रुद्रपुर में किले बनवाए।
- 1802 : ब्रिटिशर्स ने रुहेलखंड पर अधिकार कर लिया।
- 1840 : रैमजे को कुमाऊं डिविजन का असिस्टेंट कमिश्नर बनाया गया।
- तराई इंप्रूवमेंट फंड।
- रेमजे के बाद तराई को अल्मोड़ा जिले में शामिल किया गया।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share

- 1870 : काशीपुर को तराई में शामिल किया गया।
- 1895 : तराई भाबर को चलाने के लिए असिस्टेंट कमिश्नर की नियुक्ति।
- 1896 : टनकपुर भाबर को अल्मोड़ा में शामिल किया गया।
- 1897 : तराई भाबर में पटवारी और कानूनगो की नियुक्ति Ka नियम आया।
- तल्ला देश : टनकपुर।
- तराई भाबर के गांव दो भागों में विभाजित जमींदारी गांव, खाम गांव।
- रौतेला : चंद राजाओं का छोटा भाई जोकि काशीपुर की जमीन का सबसे बड़ा मालिक होता था।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share

- 1906 : तराई क्षेत्र में कुमाऊं भाबर खेतिहर न्यास निधि का गठन।
- 1906 : तराई भाबर में पटवारी और कानूनगो की नियुक्ति का प्रावधान लागू।
- 1909 : तराई में चराई का नियम निर्धारित।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN
Subscribe
like & share

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य ::

1862 : कुमाऊं आयरन वर्क्स की स्थापना।

1868 : वनों को वन विभाग के अधीन लाया गया।

1878 : सिविल और रिजर्व वनों को अलग किया गया।

1918 : तराई में इन्फ्लूएंजा महामारी फैली।

1920 : हैजा का प्रकोप ।

खत्ते या गोठ : जंगलों में बनी बस्तियां ।

UTTARA
GYAN
JEEV
Subsc
like & shar
UTTARAKHAND GYAN

** उत्तराखण्ड में 1857 की क्रांति

*- इस समय कुमाऊँ कमिश्नर: रैम्जे

* 17 सितंबर 1857 ⇒ रूहेलखंड (बरेली) के नवाब खान बहादुर खान की सेना ने कालेखाँ के नेतृत्व में हल्द्वानी जीता।

* 18 सितंबर 1857 ⇒ (मैक्सवेल + चैपमैन) ने हल्द्वानी मुक्त कराया।

** कालू मेहरा ⇒ UK के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी। * बिसुंग गाँव (लोहाघाट)
* क्रांतिवीर संगठन बनाया। (मदद: अवध नवाब वाजिद अली शाह)
(सहयोगी: आनंद सिंह फर्त्याल, बिशन सिंह) (फाँसी)

* क्रांति के समय गढ़वाल का डिप्टी कमिश्नर: "बैकेट"

* अंग्रेजों के सहयोगी: पदम सिंह, शिवराम सिंह

** नाना साहब ⇒ उत्तरकाशी प्र

** गढ़वाल हितकारिणी सभा ⇒ * स्थापना: 1901 (देहरादून) * संस्थापक: तारादत्त गैरोला
* 6 मई 1905 ⇒ गढ़वाल यूनियन ने "गढ़वाली" समाचार पत्र (मासिक) शुरू किया।

** गढ़वाल भ्रातृ मंडल ⇒ स्थापना: 1907 (लखनऊ) * संस्थापक: मथुरा प्रसाद नैथाणी
* प्रमुख उद्देश्य: सभी जातियों में आपसी बंधुत्व बढ़ाना।
* प्रथम अधिवेशन: (1908) ⇒ * कोटद्वार * अध्यक्ष: कुलानंद बड़थ्वाल
* 6^{th} अधिवेशन (30 dec 1913) ⇒
* गढ़वाल यूनियन व गढ़वाल भ्रातृ मंडल का विलय: "गढ़वाल सभा" में हुआ।

** गढ़वाल क्षत्रिय छात्रवृत्ति ट्रस्ट ⇒
* स्थापना: 14 सितंबर 1919, *- संस्थापक: जोध सिंह नेगी

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

** गढ़वाल सभा ⇒ स्थापना: 16 फरवरी 1914 (दुगड्डा) * अध्यक्ष: नारायण सिंह

* प्रमुख प्रस्ताव ⇒ पत्रिकाओं व समाचार पत्रों का एकीकरण। * समाचारपत्र: साप्ताहि

* 1915: गढ़वाल सभा ने स्टोवल प्रेस स्थापना। (दुगड्डा)

* 1916: गढ़वाली साहित्य का संकलन व प्रकाशन।

** गोरक्षणि सभा ⇒ * स्थापना: 1907 (कोटद्वार) * संस्थापक: धनीराम मिश्र

** गैरोला सभा ⇒ * स्थापना: 1904 * संस्थापक: तारादत्त गैरोला * मुख्यालय: टिहरी

* सभापति: बद्रीनाथ के रावल पंडित। * उच्च कुलीन ब्राह्मणों की सभा।

** क्षत्रिय सभा ⇒ स्थापना: 1919 * संस्थापक: जोध सिंह नेगी + प्रताप सिंह नेगी

** उत्तराखण्ड में आर्य समाज ⇒

* आर्य समाज के संस्थापक: स्वामी दयानंद सरस्वती जी। (10 April 1875, मुंबई)

* स्वामी जी ने अपने मत का प्रचार UK में: 1876 (हरिद्वार, महाकुंभ)

* स्वामी जी ने देहरादून में आर्य समाज की स्थापना 1879ई० में की।

* 1910 ⇒ दुगड्डा में I[st] आर्य समाज स्कूल खोला गया।

* 1913 ⇒ लाला लाजपत राय की मौजूदगी में मुक्तेश्वर में हरिजनों को जनेऊ पहनाई गई।

* 1913 ⇒ स्वामी सत्यदेव परिव्राजक जी ने अल्मोड़ा में "शुद्ध साहित्य समिति" की स्थापना

* 1910 ⇒ जसपुर में आर्य समाज की शाखा खोली गई।

* 1920 ⇒ रामगढ़ में आर्य समाज की शाखा खोली गई।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

** होमरूल लीग

*तिलकजी द्वारा होमरूल लीग की स्थापना : 28 अप्रैल 1916

* ऐनी बेसेंट द्वारा होमरूल लीग की स्थापना : सितंबर 1916

* उत्तराखण्ड में होमरूल की स्थापना : 1914 (मोहन जोशी, चिरंजी लाल, B.D.पांडे)

* होमरूल लीग पर B.D.पांडे जी का कथन : " हमने दली बुढ़िया बसंती की होमरूल लीग न खोली है, वरन लोकमान्य तिलक वाली लीग की स्थापना की है।"

* देहरादून में होमरूल लीग की शाखा की स्थापना : 1918 (स्वामी विचारानंद सरस्वती ने)

** अन्य महत्वपूर्ण तथ्य ⇒

*1912 ⇒ अल्मोड़ा कांग्रेस की स्थापना। [ज्वालादत्त जोशी, सदानंद सनवाल]

* 1918 ⇒ गढ़वाल कांग्रेस कमेटी स्थापना। [बैरिस्टर मुकुंदी लाल, अनुसूया प्रसाद बहुगुणा

UTTARAKHAND GYAN WITH DEEWAN

* अंग्रेजों द्वारा उत्तराखण्ड की जनता के शोषण का पर्याय बन चुकी यह प्रथा 3 प्रकार की थी→

1. कुली बेगार ⇒ निशुल्क कार्य।

2. कुली उतार ⇒ निशुल्क कुली।

3. कुली बर्दायिश ⇒ निशुल्क राशन।

** कुली बेगार आंदोलन

* 1822 ⇒ कुमाऊँ कमिश्नर ट्रेल ने खच्चर सेना की स्थापना की।
* 1903 ⇒ अल्मोड़ा के खत्याड़ी गाँव निवासियों ने कुली बेगार का विरोध किया।
* 1903 ⇒ कर्जन को इस कुप्रथा की जानकारी: गौरी दत्त बिष्ट, नारायण दास ने दी।
* 1907 ⇒ सरकार ने बेगार के बदले मूल्य निर्धारित किया।
* 1913 ⇒ रुद्रप्रयाग में कुली एजेंसी बनी।
* 14 जुलाई 1913 ⇒ B.D. पांडे जी ने अल्मोड़ा अखबार में जंगलात कानून और बेगार (कुली) प्रथा के बारे में लिखा।
* 1918 ⇒ पांडे जी ने कलकत्ता में गाँधीजी को इस कुप्रथा की जानकारी दी।
* 1920 ⇒ कुमाऊँ परिषद के 4^{th} अधि. में इस कुप्रथा को समाप्त करने का प्रस्ताव रखा गया।
* 1 जनवरी 1921 ⇒ कत्यूर के चामी गाँव निवासियों ने हरू मंदिर में बेगार न देने की शपथ ली।

** कुली एजेंसी ⇒ (1908–1924 ईस्वी) ⇒

* इसका प्रथम विचार: गिरिजा दत्त नेथाणी जी ने रखा।
* कुली एजेंसी स्थापना: 1908 * संस्थापक: जोध सिंह नेगी * मुख्यालय: पौड़ी
* लैंसडाउन में कुली एजेंसी की स्थापना: 1912 ई.

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

**** कुली बेगार प्रथा का अंत ⇒**

* 10 जनवरी 1921 ⇒ कुप्रथा के विरोध में बागेश्वर में जनसैलाब।

* 13-14 जनवरी 1921 ⇒ 40 हजार से अधिक लोगों संग B.D. पांडे, हरगोविंद पंत आदि ने बागनाथ मंदिर में पूजा की।

* तत्कालीन अल्मोड़ा का डिप्टी कमिश्नर : डायविल

* इसी दिन सरयू मैदान पर सरयू नदी के किनारे उत्तरायणी मेले के अवसर सभी ने बेगार न देने का संकल्प लिया।

* इस आंदोलन के बाद बद्रीदत्त पांडे जी को "कुमाँऊ केशरी" की उपाधि दी गई।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

** कुमाऊँ परिषद (1916 – 1926)

* इसकी सर्वप्रथम कल्पना : 31 मार्च 1908 (अल्मोड़ा अखबार)

* स्थापना : सितंबर (1916)   * स्थान : मझेड़ा ग्राम (नैनीताल)

* अध्यक्ष : रायबहादुर नारायण दत्त छिपाल

** कुमाऊँ परिषद के अधिवेशन ⇒

* अधिवेशन	* वर्ष	* स्थान	* अध्यक्ष
* प्रथम	* सितंबर (1917)	* अल्मोड़ा	* जयदत्त जोशी
* दूसरा	* 24-25 दिसंबर (1918)	* हल्द्वानी	* तारादत्त गैरोला
* तीसरा	* 22-24 अक्टूबर (1919)	* कोटद्वार	* बद्री दत्त जोशी
* चौथा	* 21-23 दिसंबर (1920)	* काशीपुर	* हरगोविंद पंत
* पाँचवाँ	* (1923)	* टनकपुर	* बद्रीदत्त पांडे
* छठा	* (1926)	* गनियाद्योली (रानीखेत)	* मुकुंदी लाल

* 1926 ⇒ कुमाऊँ परिषद का कांग्रेस में विलय हो गया।

* महत्वपूर्ण तथ्य ⇒ * कुमाऊँ परिषद के दूसरे अधिवेशन में → कुली बेगार से मुक्ति, जंगलात के अधिकार जनता को लौटाने संबंधी प्रस्ताव पारित।

* कुमाऊँ परिषद का तीसरा अधिवेशन → हिंदू मुस्लिम एकता के लिए प्रसिद्ध।
[जंगलात प्रस्ताव : प्रेम वल्लभ पांडे, कुली उतार प्रस्ताव : मथुरा दत्त नैथाणी]

* कुमाऊँ परिषद के पाँचवें अधिवेशन में → भूमि बंदोबस्त व वन नीति पर चर्चा।

* परिषद ने "नायक सुधार समिति" की स्थापना की। (I st बैठक : Nov 1919, नैनीताल)

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

** महत्वपूर्ण तथ्य ⇒

* क्रांतिकारी → रास बिहारी बोस (FRI कर्मचारी) ने भी क्रांतिकारी संगठन बनाये।
* रास बिहारी घोष व बसंत कुमार जी देहरादून से दिल्ली पहुँचकर हार्डिंग II पर बम फेंका।
* 1903 ⇒ अल्मोड़ा में हैप्पी क्लब की स्थापना। (G.B. पंत + हरगोविंद पंत)
* B.D. पांडे जी इलाहाबाद के पत्र लीडर के सहसंपादक रहे। (1908 में)
* 1911 ⇒ लीडर पत्र के 28 मई के अंक में पांडे जी UK में राजनीतिक संगठनों की कमी के बारे में लिखते हैं।
* B.D. पांडे जी की तिलक जी से चार बार भेंट हुई।
  [1905, बनारस कांग्रेस], [1916, लखनऊ कांग्रेस], [1917, कलकत्ता कांग्रेस], [1919, अमृतसर]
* अमृतसर कांग्रेस 1919 में भाग लेने वाले प्रमुख व्यक्ति ⇒ मुकुंदी लाल, अनुसूया प्रसाद बहुगुणा, B.D. पांडे, हरगोविंद पंत, मोहन सिंह मेहता आदि।
* जलियावाला बाग में आयोजित सभा में 26 दिसंबर 1919 को B.D. पांडे जी ने भाषण दिया।
* 1920 ⇒ मोती लाल नेहरू जी अल्मोड़ा पहुँचे।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEVAN

** उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास

* **द हिल्स** ⇒ (1842) प्रकाशन: जॉन मैकिनन [UK व उत्तर भारत का Ist] * भाषा: अंग्रेजी
  * स्थान: सेमिनरी स्कूल परिसर (मसूरी) * ~~1890~~ 1849-50 ⇒ बंद हुआ।
  * 1860: प्रकाशन पुनः शुरू। (Dr. स्मिथ) * 1865 ⇒ पूर्ण रूप से बंद।

* **मेसिफलाइट (1845)** ⇒ संपादक: मिस्टर जॉन लैंग * स्थान: मसूरी * भाषा: अंग्रेजी
  * 1857 ⇒ डलहौजी ने इसे साम्राज्य विरोधी अखबार कहा।

* **समय विनोद समाचार पत्र (1868)** ⇒ UK में प्रकाशित प्रथम हिंदी समाचार पत्र। (पाक्षिक)
  * संपादक: जयदत्त जोशी * स्थान: नैनीताल * भाषा: हिंदी, उर्दू * 1878 में बंद।

* **अल्मोड़ा अखबार (1871)** ⇒ शुरुवात: डिबेटिंग क्लब (अल्मोड़ा) [1871 से]
  * **संस्थापक**: बुद्धि बल्लभ पंत
  * **अन्य संपादक**: सदानंद सनवाल, इम्तियाज अली, जीवानंद जोशी, विष्णु दत्त जोशी
  * **1913** ⇒ संपादक "**बद्रीदत्त पांडे**" जी बने। (साप्ताहिक)
  * **14 जुलाई 1913** ⇒ अखबार में कुली बेगार प्रथा, जंगलात कानूनों के विरुद्ध लेख छपा
  * 1918 ⇒ अखबार में "भालुसाही" शीर्षक से लेख छपा।
  * अप्रैल 1918 ⇒ तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर 'लोमश' ने अखबार पर प्रतिबंध लगाया।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN

टिहरी रियासत गढ़वाल समाचार पत्र ⇒ (1901)

* संस्थापक: कीर्तिशाह (टिहरी नरेश) * पाक्षिक समाचार पत्र।

गढ़वाल समाचार (1902) ⇒ * संस्थापक: गिरिजा दत्त नैथाणी * स्थान: लैंसडोन
(मासिक) * 2 वर्ष में बंद। → [गढ़वाल में पत्रकारिता के जनक]

* 1912 ⇒ नैथाणी जी ने दुगड्डा में प्रेस खोली।
* 1913 ⇒ इसी प्रेस से पुन: गढ़वाल समाचार शुरू किया।

गढ़वाली समाचार पत्र: (1905) * 1901 में स्थापित गढ़वाल यूनियन ने इसकी स्थापना की।

* प्रमुख सहयोग: विश्वम्भर दत्त चंदोला * प्रथम अंक: मई 1905 [पाक्षिक] (1913: साप्ताहिक)

* **कॉस्मोपोलेटिन (1910) ⇒** संस्थापक: बैरिस्टर बुलाकी राम * स्थान: देहरादून (भास्कर प्रेस)
  * देहरादून से प्रकाशित Ist अंग्रेजी समाचार पत्र।
  * 1910 ⇒ B.D. पांडे जी ने भी इसमें काम किया।

* **विशाल कीर्ति (1913) ⇒** * संपादक: सदानंद कुकरेती * फरवरी 1913: बद्रीकेदार प्रेस (पौड़ी) से
  * मासिक समाचार पत्र।

* **पुरुषार्थ (1917) ⇒** * संपादक: गिरिजादत्त नैथाणी
  * गढ़वाल समाचार बंद होने के बाद शुरू। (अक्टूबर 1917)
  * 1927: नैथाणी जी के निधन के साथ ही समाचार पत्र बंद।

* **शक्ति (15 अक्टूबर 1918) ⇒** विजयदशमी के दिन से। * संपादक: B.D. पांडे जी, मोहन जोशी (1914)
  * देशभक्त प्रेस से। * 1942-45 ⇒ प्रकाशन बंद। * 1946: पुन: प्रकाशन।
  * अन्य संपादक: दुर्गादत्त पांडे, मनोहर पंत, राम सिंह धोनी, आदि।

* **तरुण कुमाँऊ ⇒ (1922)** संपादक: बैरिस्टर मुकुंदीलाल (लैंसडाउन) * हिंदी साप्ताहिक।
  * 1923 में बंद।

UTTARAKHAND WITH JEEVAN

* * स्वाधीन प्रजा (1930) * संपादन: विक्टर मोहन जोशी। (जनवरी 1930)
    * 1932: अखबार बंद।

* समता (1935) * संपादन: मुंशी हरिप्रसाद टम्टा (साप्ताहिक, हिंदी)
    * इनके बाद संपादन: श्रीमती लक्ष्मी देवी टम्टा [1st दलित महिला पत्रकार]

* युगवाणी (1947) ⇒ संपादन: भगवती पांथरी (15 Aug 1947 प्रथम अंक) [पाक्षिक, साप्ताहि
    * 2001 ⇒ मासिक पत्रिका के रूप में नियमित रूप से प्रकाशित।

* प्रजाबंधु (1947) ⇒ संपादन: जयदत्त वैला * स्थान: रानीखेत।

UTTARAKHAND GYAN WITH JEEWAN